बच्चों के लिए

क़ुरआन की बातें

भाग-1

सैयद नज़र ज़ैदी

अनुवाद

नाहीद अख़्तर

विषय सूची

कुछ अल्फ़ाज़ का मतलब

इस किताब में कुछ ऐसे अल्फ़ाज़ आयेंगे, जिनको मुख़्तसर शक्ल में लिखा गया है। किताब पढ़ने से पहले ज़रूरी है कि उन अल्फ़ाज़ की मुकम्मल शक्ल और मतलब समझ लिया जाये, ताकि किताब पढ़ते वक़्त कोई परेशानी न हो। ऐसे अल्फ़ाज़ ये हैं :

अलैहि० : इस की मुकम्मत शक्ल है, **'अलैहिस्सलाम'**, यानी 'उन पर सलामती हो !' नबियों और फ़रिश्तों के नाम के साथ इज़्ज़त और मुहब्बत के लिए ये अल्फ़ाज़ बढ़ा देते हैं।

रज़ि० : इस की मुकम्मल शक्ल है, **'रज़ियल्लाहु अन्हु'**, इस के मायने हैं अल्लाह उन से राज़ी हो !' **'सहाबी'** के नाम के साथ यह इज़्ज़त और मुहब्बत की दुआ बढ़ा देते हैं।

सहाबी उस ख़ुशक़िस्मत मुसलमान को कहते हैं, जिसे नबी सल्ल० से मुलाक़ात का मौक़ा मिला हो। **सहाबी** की जमा (बहुवचन) **सहाबा** है और मुअन्नस (स्त्रीलिंग) **सहाबिय** : है।

रज़ि० अगर सहाबिया के नाम के साथ इस्तेमाल हुआ हो तो **रज़ियल्लाहु अन्हा** पढ़ते हैं और अगर **सहाबा** के लिए इस्तेमाल हुआ हो तो **रज़ियल्लाहु अन्हुम** कहते हैं।

सल्ल० : इस की मुकम्मल शक्ल है, **'सल-लल-लाहु अलैहि व सल्लम'** इसका मतलब है, 'अल्लाह उन पर रहमत और सलामती की बारिश करे।' हज़रत मुहम्मद सल्ल० का नाम लिखते, लेते या सुनते हैं तो इज़्ज़त और मुहब्बत के लिए यह दुआ बढ़ा देते हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
(अल्लाह के नाम से जो मेहरबान और रहम करने वाला है)

आपस की बातें

अगर कोई यह कहे कि मैंने एक ऐसा आदमी देखा है, जिसकी जेबें सौ-सौ रुपयों के नोटों से भरी हुई हैं, लेकिन वह सड़कों पर भीख मांगता फिर रहा है, तो मुश्किल से ही कोई इस बात का यक़ीन करेगा। सुनने वाले सोचेंगे कि जब वह इतना अमीर है, तो भीख क्यों मांग रहा है? अपनी जेबों से नोट निकाल कर उनसे अपनी ज़रूरतें पूरी क्यों नहीं करता। ऐसे आदमी के बारे में ख़्याल किया जायेगा कि या तो उसे यह मालूम नहीं कि उसकी जेबों में कितनी दौलत है और या फिर वह पागल है। जिसकी अक्ल ठीक हो और जो अपनी हालत से पूरी तरह बाख़बर हो वह तो भीख मांगकर लोगों से अपना मज़ाक़ कभी नहीं उड़वा सकता।

अगर ग़ौर करें तो हम मुसलमानों की हालत आजकल कुछ ऐसी ही है।

अल्लाह की ख़ास रहमत से हमारे पास क़ुरआन जैसी आसमानी किताब मौजूद है, जिसमें दोनों जहानों में कामियाबियां हासिल करने के तरीक़े ऐसे आसान अंदाज़ में बता दिये गये हैं कि थोड़ी-सी अक्ल और सोच-विचार रखने वाला आदमी भी इन्हें बिल्कुल आसानी से जान सकता है और उन पर अमल कर सकता है। लेकिन हमारा हाल यह है कि हम इस पवित्र किताब की बातों को समझने की कोशिश नहीं करते। इधर-उधर भीख मांगते फिर रहे हैं। कोई अमरीका की तरफ़ देख रहा है और कोई किसी और तरफ़।

इस किताब में हमने प्यारे बच्चों के लिए क़ुरआन पाक की कुछ

ऐसी बातें जमा कर दी हैं, जिनसे कामियाब इन्सान बनने के सबसे अच्छे तरीक़े मालूम होते हैं। क़ुरआन मजीद तो शुरू से आख़िर तक ऐसी ही अच्छी बातों से भरा हुआ है, लेकिन हम उनमें से कुछ बातें ही पेश कर रहे हैं, जो ऐसी हैं कि इन पर अमल करके अपनी ज़िन्दगी को ज़्यादा-से-ज़्यादा कामियाब बनाया जा सकता है।

हम उम्मीद करते हैं कि बच्चे यह किताब शौक़ से और ख़ूब समझकर पढ़ेंगे और उन बातों पर अमल करने की पूरी कोशिश करेंगे, जो क़ुरआन पाक ने बताई हैं। याद रखना चाहिये कि इनमें से एक बात भी ऐसी नहीं है, जिसके बारे में यह कहा जा सके कि इससे वह फ़ायदा हासिल न होगा जो बताया गया है। ये सब-की-सब आज़माई हुई बातें हैं। हमारे बुज़ुर्गों ने इन्हीं को अपनाया था और दुनिया की सबसे बड़ी सल्तनत के मालिक बन गये थे।

अब भी जो इन पर अमल करेगा, अल्लाह अपना वादा ज़रूर पूरा करेगा और उसे हर लिहाज़ से अच्छा बना देगा। देखें बच्चों में से कौन-कौन ख़ुशनसीब उन पर अमल करता है।

—नज़र ज़ैदी
27, नवम्बर, 1988

सबसे ज़्यादा ज़रूरी बात

मुसलमान, बल्कि समझदार इंसान होने की सबसे पहली निशानी यह है कि अल्लाह पर यक़ीन हो। यह बात दिल से मानी जाय कि यह दुनिया आप से आप नहीं बन गई, बल्कि कोई इसका बनाने वाला है और वह अल्लाह है। हम जितनी चीज़ें भी देखते और महसूस करते हैं सब अल्लाह ने बनाई हैं। ज़मीन, आकाश, चांद, सूर्य, सितारे, बादल, हवा, आग, पानी, पेड़, पहाड़ और सारे जानदार, जिनमें हम इन्सान भी शामिल हैं, अल्लाह ने पैदा किये हैं।

दूसरी बात यह है कि अल्लाह ने जो कुछ भी पैदा किया है, चाहे वह मक्खी और मच्छर ही क्यों न हो यूँ ही पैदा नहीं कर दिया, बल्कि उसका कुछ-न-कुछ फ़ायदा और मक़सद है।

तीसरी बात यह है कि अल्लाह ने जितनी चीज़ें भी पैदा की हैं, उन सबका सरदार इन्सान है। यहां तक कि इंसान का दर्जा फ़रिश्तों से भी ऊँचा है, इसलिए यह बात बहुत ज़रूरी है कि इंसान अपने उस दर्जे को पहचाने और अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करे और किसी को इस क़ाबिल न समझे कि अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ वह उसे किसी तरह का फ़ायदा या नुक़्सान पहुँचा सकता है।

बुतों, चांद, सूर्य, सितारों, पेड़ों और दरियाओं वग़ैरह को पूजना नासमझी की बात है। जो लोग ऐसा करते हैं, वे बहुत नादान हैं। यह बिल्कुल ऐसी ही बात है, जैसे कोई बादशाह अपने नौकरों को सजदा करे। सोचिए, है न नादानी की बात! बस, ऐसे लोगों का हाल, जो अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों को पूजते हैं, उस नासमझ बादशाह

जैसा ही है।

जिस तरह यह बात ज़रूरी थी कि बादशाह अपने नौकरों से उनकी हैसियत के मुताबिक़ काम लेता और अपने मर्तबे को पहचानता, इसी तरह यह बात भी ज़रूरी है कि इंसान अपने इस ऊँचे मर्तबे को पहचाने जो उसे अल्लाह ने दिया है और उन सब चीज़ों से काम ले जो अल्लाह ने उसी के लिए बनाई हैं। न किसी इंसान के बुत की इबादत करे और न किसी और चीज़ के बारे में यह अक़ीदा रखे कि वह उसे किसी तरह का फ़ायदा या नुक़्सान पहुँचा सकती है।

ऊपर की लाइनों में जो बातें लिखी गयी हैं, उनमें सबसे पहली बात यह है कि इंसान अल्लाह पर पक्का ईमान लाए और यह बात पूरी तरह माने कि सब चीज़ें उसी ने पैदा की हैं और सबसे ऊंची शान उसी की है। वह ऐसा है कि उसे किसी की मदद की ज़रूरत नहीं और न कोई उसके कामों में दख़ल दें सकता है।

अगर कोई यह अक़ीदा न रखता हो, तो वह मुसलमान नहीं हो सकता। इस अक़ीदे को तौहीद का अक़ीदा कहते हैं और यह हमारे दीने इस्लाम की बुनियाद है। ख़ुद अल्लाह ने अपनी सच्ची किताब क़ुरआन शरीफ़ में यह बात अच्छी तरह समझाई है। इरशाद होता है–

> "उसने (अल्लाह ने) हर चीज़ को पैदा किया है और वह सब चीज़ों का इल्म रखता है। वह है अल्लाह, तुम्हारा रब (पालने वाला) उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है। हर चीज़ उसी ने बनाई है, इसीलिए तुम सिर्फ़ उसी की इबादत करो और वही सबकी परवरिश करने वाला है।" —3:102-103

यह बात क़ुरआन मजीद की और बहुत सी आयतों में भी बयान

की जा चुकी है और अलग-अलग अंदाज़ में इस तरह बयान की गयी है कि अल्लाह के ख़ालिक़, मालिक और राज़िक़, मतलब रोज़ी देने वाला होने की बात पूरी तरह समझ में आ जाती है, लेकिन सिर्फ़ इन दो आयतों से भी अच्छी तरह मालूम हो जाता है कि हर चीज़ अल्लाह ने बनाई है, वह हर बात से पूरी तरह बाख़बर है, यहां तक कि दिलों में छिपे हुए भेदों को भी अच्छी तरह जानता है। वही सबको रोज़ी देता है और सिर्फ़ वही उस शान और बुज़ुर्गी का मालिक है कि उसकी इबादत की जाए।

जो लोग अल्लाह के अलावा और चीज़ों को पूजते हैं और उनसे मदद मांगते हैं, उन्हें मुशरिक कहा जाता है, और शिर्क, यानी अल्लाह की ज़ात और उसकी सिफ़ात में किसी को उसके बराबर समझना, बड़ा गुनाह है। क़ुरआन में यह बात बताई गयी है कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक करने वाला हमेशा-हमेशा दोज़ख में रहेगा, जबकि छोटे-मोटे गुनाह करने वालों को माफ़ी मिल जायेगी या उनके गुनाहों के मुताबिक़ थोड़ी-थोड़ी मुद्दत दोज़ख़ में डालकर निकाल लिया जायेगा और जन्नत में भेज दिया जायेगा।

यहाँ यह बात भी समझ लेनी चाहिये कि दोज़ख़ दहकती हुई आग का गढ़ा है और जन्नत ऐसा बाग़ है, जिसमें हर तरह का आराम, इज़्ज़त और ख़ुशी हासिल होगी। जन्नत अल्लाह का सबसे बड़ा इनाम है।

जिस तरह कुछ कमअक़्ल वाले लोग अल्लाह को नहीं मानते, उसी तरह वे जाहिल लोग जन्नत और दोज़ख़ पर भी ईमान नहीं रखते। लेकिन मुसलमान बनने के लिये यह यक़ीन रखना ज़रूरी है कि क़ियामत आयेगी, यानी यह दुनिया ख़त्म हो जायेगी और सबको अपने-अपने अच्छे या बुरे कामों का बदला मिलेगा। जिन्होंने अच्छे काम किये होंगे, उन्हें जन्नत में रखा जायेगा और जिन्होंने

बदक़िस्मती से बुरे कामों में ज़िन्दगी गुज़ारी होगी, उन्हें दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा।

इन्सान की बड़ाई यानी सब मख़लूक़ का सरदार होने और उन कामों के बारे में जिनकी वजह से किसी को इनाम या सज़ा मिलेगी, हम आगे बयान करेंगे।

इन्सान सबका सरदार है

क़ुरआन हमें यह बताता है कि अल्लाह ने जितनी भी चीज़ें पैदा की हैं, उनमें इन्सान सबका सरदार है। फरिश्तों से लेकर चांद, सूरज और सितारों तक हर चीज़ इन्सान की ख़िदमत के लिये पैदा की गई है।

सब चीज़ों का सरदार बनाने के साथ अल्लाह ने इन्सान को एक बड़ाई यह दी है कि उसे अपना ख़लीफ़ा यानी जॉनशीन बना कर दुनिया में भेजा है। गोया अल्लाह के बाद जिसका दर्जा सबसे ऊंचा है वह इन्सान है। क़ुरआन में है—

> "बेशाक अल्लाह आसमानों और ज़मीन की हर छुपी चीज़ को अच्छी तरह जानता है। वह तो सीनों में छुपे हुये भेदों से भी अच्छी तरह वाकिफ़ है। और वही तो है जिसने तुमको (इन्सान को) ज़मीन में (अपना) ख़लीफ़ा बनाया है। अब जो कोई कुफ़्र करता है, उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर है और कुफ़्र करने वालों को उनका कुफ़्र इसके सिवा कुछ फ़ायदा नहीं पहुंचाता कि उनपर उनके रब का ग़ुस्सा ज़्यादा होता चला जाता है। कुफ़्र करने वालों के लिए नुक़्सान बढ़ते चले जाने के सिवा कोई तरक़्क़ी नहीं।" —35 : 38-39

इस बात का सुबूत कि इन्सान का दर्जा फ़रिश्तों से ज़्यादा है, क़ुरआन की इस आयत से मिलता है। इरशाद हुआ—

> "फिर जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम

(अलैहिस्सलाम) के आगे झुक जाओ। (उसे सजदा करो) तो सब झुक गये, मगर इबलीस (शैतान) ने इंकार किया। वह अपनी बड़ाई के घमण्ड में पड़ गया और हुक्म न मानने वालों में शामिल हो गया।" —2:34

क़ुरआन पाक की आयतों से यह बात पूरी तरह साबित हो जाती है कि अल्लाह ने इन्सान को अपनी मख़लूक़ में सबसे ऊँचा दर्जा दिया है और अब इस बात पर हमें ख़ुद ग़ौर करना चाहिये कि सबसे ज़्यादा सूझबूझ रखने वाले हमारे रब ने इन्सान को यह दर्जा बेवजह तो नहीं दिया। इसकी भी कोई वजह थी और वह यह थी कि इस दुनिया को वैसा बनाने के लिये जैसी यह है किसी को सब मख़लूक़ का सरदार बनाना ज़रूरी था। हम देखते हैं कि कोई छोटा-सा काम करने के लिये भी यह बात ज़रूरी होती है कि किसी को निगरानी करने वाला बनाया जाये। अदालत के अमले में जज का यह दर्जा होता है कि वह जो फ़ैसला कर दे सब उसे मान लें। दफ़्तर में हेड क्लर्क या सुपरिन्टेन्डेंट होता है। फ़ौज में कमांडर होता है। इसी तरह से किसी भी काम को अच्छी तरह से करने के लिये यह सिलसिला क़ायम करना पड़ता है, तभी तो इस दुनिया का कारख़ाना चलाने के लिये अल्लाह ने इन्सान को अपना ख़लीफ़ा बनाया।

इस सिलसिले में एक बात और बहुत ज़रूरी यह है कि जिसे अफ़सर बनाया जाये, उसमें काम चलाने की क़ाबलियत भी हो और अल्लाह ने यह एहसान भी फ़रमाया कि इन्सान को दुनिया में अपना ख़लीफ़ा बना करके वैसी ही क़ाबलियत भी दी है।

अल्लाह ने इन्सान को जो ख़ूबियाँ दीं, उनमें सबसे बढ़कर अक़्ल यानी सोचने, समझने और फ़ैसला करने की ताक़त है और सच बात यह है कि उसने अपनी इसी ताक़त से सारी कामियाबियाँ हासिल की

हैं। हम देखते हैं कि शेर, हाथी और गेंडा आदि कितने ही जानवर ऐसे हैं, जो इन्सान से ज़्यादा ताक़त रखते हैं। लम्बाई और चौड़ाई में भी वे इन्सान से बढ़े हुये हैं, लेकिन उनमें अक़्ल कम है। इसलिये इन्सान उनपर इस तरह क़ाबू पा लेता है कि वे उसका हर हुक्म मानते हैं। सरकस में हम देखते हैं कि इन्सान के हुक्म से शेर और बकरी एक बरतन में पानी पीते हैं।

जानवरों पर क़ाबू पा लेना भी बड़ी बात है। लेकिन इन्सान ने तो अपनी अक़्ल की मदद से इससे भी बड़ी कामियाबियाँ हासिल की हैं। मिसाल के तौर पर उसने बिजली जैसी ख़तरनाक ताक़त को इस तरह ग़ुलाम बना लिया है कि वह उसका हर हुक्म मानती है। फिर उसने अक़्ल ही की क़ुव्वत से हवाई जहाज़, मोटर और रेल गाड़ी जैसी सवारियाँ बना ली हैं, जो दिनों का सफ़र घण्टों में तय कर लेती हैं और यह तो मिसाल के तौर पर कुछ चीज़ें गिनवाई गई हैं, वरना इन्सान की अक़्ल के कारनामे तो इतने हैं कि इन्हें गिना भी नहीं जा सकता। ये शानदार इमारतें, साफ़-सुथरी सड़कें, बड़े-बड़े कारख़ाने और दरियाओं पर बांधे हुये बांध और नहरें वग़ैरह सब इन्सान की अक़्ल के ही करिश्मे हैं।

कहा जा सकता है कि इन्सान की यह तरक़्क़ी अपनी जगह है, लेकिन इन्सानों में कुछ इन्सान ऐसे भी तो हैं जो ढंग से इन चीज़ों को इस्तेमाल भी नहीं कर सकते। जिनकी वजह से दुनिया ऐसी ख़ूबसूरत बन गई है? हाँ, यह बात बिल्कुल ठीक है और उसकी वजह यह है कि जो लोग निकम्मे या नाकारा लगते हैं, उन्होंने इस तरह ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी जिस तरह शरीफ़ और समझदार लोगों को गुज़ारनी चाहिये। दूसरे शब्दों में उन्होंने अपना यह नुक़्सान ख़ुद किया है। जिसका दिल चाहे छानबीन करके देख ले, उसे मालूम होगा ये वे बदक़िस्मत हैं, जो

तालीम हासिल करने के ज़माने में आवारागर्दी करते रहते थे। ये न अपने माँ-बाप का कहा मानते थे, और न उस्ताद का।

अम्मी समझातीं बेटे! बाज़ार की चाट खाने से सेहत ख़राब हो जाती है। वे चाट ज़रूर खाते, चाहे चोरी करनी पड़ती। उस्ताद कहते, बेटे इस उम्र में जितनी मेहनत कर लोगे पूरी ज़िन्दगी काम आयेगी। पढ़-लिख लोगे तो बड़े अफ़सर बन जाओगे। लेकिन वे आवारागर्दी से बाज़ न आते और इन सब बातों का यही नतीजा निकल सकता था कि जाहिल भी रह गये और सेहत जैसी नेमत भी गँवा बैठे। हुई न अपने हाथों ख़ुद को तबाह व बर्बाद करने वाली बात!

दूसरी तरफ़ जिन बच्चों ने मेहनत से तालीम हासिल की और माँ-बाप के इशारों पर चले, वे कामियाबियाँ हासिल करते चले गये। दुनिया में यह जितनी चमक-दमक नज़र आती है, ऐसे ही नेक दिल और मेहनती लोगों की कोशिशों का नतीजा है।

पहले की तरह आज भी यह बात सच साबित होगी कि जो बोयेगा सो काटेगा। दुनिया के सबसे बड़े मूजिद (ईजाद करने वाले) ऐडिसन के बारे में यह बात मशहूर है कि उसे इल्म हासिल करने का इतना ज़्यादा शौक़ था कि जिस रेलगाड़ी में वह अख़बार बेचा करता था उसके एक डिब्बे में उसने छोटी-सी तजुर्बेगाह क़ायम कर ली थी। जब वक़्त मिलता था, अपने तजुर्बों में लग जाता था। उसके शौक़ और मेहनत का यह हाल था कि उसे खाने-पीने तक का होश न रहता था। दिन-रात काम में लगा रहता था। नींद आती थी, तो वर्कशाप की किसी मेज़ पर लेटकर सो जाता था। जो बच्चे यह किताब पढ़ रहे हैं वे अभी उस जगह हैं, जहाँ से कामियाबी और नाकामी दोनों तरफ़ बढ़ने के लिये रास्ते खुले हैं। अगर उन्होंने मेहनत, शराफ़त और ईमानदारी को अपनाया और सारा ध्यान इल्म हासिल करने की तरफ़

दिया तो कामियाबी बढ़कर उनके क़दम चूमेगी और उनका नाम उन बड़े लोगों में लिखा जायेगा जो इस ज़मीन पर अल्लाह के ख़लीफ़ा बने। उनकी पूरी ज़िन्दगी इज़्ज़त और आराम से गुज़रेगी और मरने के बाद भी अपने अच्छे कामों का इनाम पायेंगे। लेकिन अगर ख़ुदा न करे किसी ने दूसरा रास्ता अपना लिया, तो वह दुनिया में भी नाकाम रहेगा और मरने के बाद भी अज़ाब भुगतेगा।

क़ुरआन में जहाँ यह बात बताई गई है कि अल्लाह ने इन्सान को अपना ख़लीफ़ा बनाया और उसे सारी मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त बख़्शी है, वहाँ यह भी बताया है कि जो लोग सच्चाई का रास्ता छोड़ देते हैं, वे ज़िल्लत के गढ़े में गिर जाते हैं और उनकी हालत जानवरों से भी बदतर हो जाती है। क़ुरआन में फ़रमाया गया है—

> "ज़माने की क़सम है, इन्सान सख़्त नुक़सान उठाने वाला है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाये और भले काम करते रहे और एक-दूसरे को हक़ की नसीहत और सब्र की नसीहत करते रहे।" —103 : 1-3

क़ुरआन पाक की यह सूरत बताती है कि अल्लाह के इनाम के हक़दार सिर्फ़ वे लोग हैं, जो नेक और ईमानदार बनकर ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, हक़ पर क़ायम रहेंगे और अगर किसी तरह की परेशानी आयेगी तो सब्र करेंगे और दूसरों को भी ऐसा ही करने की नसीहत करते रहेंगे।

नमाज़ फ़र्ज़ है

फ़र्ज़ उस काम को कहा जाता है कि जो न किया जाए, तो उस आदमी को सज़ा दी जाती है जिसने सुस्ती या नासमझी की वजह से वह काम न किया हो। हमारे दीन इस्लाम के कामों में नमाज़ एक ऐसा ही काम है। नमाज़ पढ़ने के बारे में प्यारे नबी (सल्ल०) का हुक्म यह है कि बच्चा जब सात साल का हो जाये तो उसे नमाज़ सिखाई जाये और ताकीद की जाये कि वह पांचों वक़्त की नमाज़ें पढ़ा करे और जब उसकी उम्र दस साल हो जाये, तो नमाज़ न पढ़ने की सूरत में उसे सज़ा दी जाये।

नमाज़ को दीन का सुतून कहा गया है और बच्चे यह बात जानते हैं कि सुतून इमारत के उस हिस्से को कहते हैं, जो छत को क़ायम रखता है। अगर सुतून निकाल लिया जाये तो छत गिर जाती है। ग़रज़ यह कि नमाज़ एक ऐसा ज़रूरी काम है कि अगर यह न किया जाये तो दीन की इमारत सलामत नहीं रहती।

क़ुरआन शरीफ़ में सात सौ बार नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया गया है और बुज़ुर्गों ने यह भी बताया है कि जान-बूझकर नमाज़ छोड़ने वाला या उसे दीन का ज़रूरी हुक्म न मानने वाला मुसलमान नहीं रहता है और यह ऐसी बात है, जैसे कोई बादशाह नाराज़ होकर किसी आदमी को अपने दरबार से निकलवा दे और वे सारे फ़ायदे उससे छीन लिये जायें, जो बादशाह का दरबारी होने की वजह से उसे हासिल है।

मुसलमान अल्लाह की फ़ौज का सिपाही होता है और यह दर्जा हासिल करने के बाद वह दुनिया और आख़िरत की सब नेमतों का

हक़दार बन जाता है। सोचने की बात है कि यह मर्तबा छिन जाये तो उसका किस क़द्र नुक़्सान होगा। उसका तो सभी कुछ तबाह हो गया।

कुछ कम समझ इस बात से धोखा खा जाते हैं कि जो लोग बेदीन हैं और नमाज़ रोज़ा कुछ नहीं जानते उन्हें भी दुनिया का सब ऐश आराम हासिल है, बल्कि दुनिया के माल व दौलत में तो वे मुसलमानों से बढ़े हुये हैं, लेकिन ऐसा समझना बिल्कुल नादानी है। एक कम अक्ल आदमी भी यह जानता है कि हमारी इस दुनिया में कोई चीज़ भी ऐसी नहीं, जो हमेशा बाक़ी रहने वाली हो, ख़ुद इन्सान कुछ मुद्दत ज़िन्दा रहता है और फिर मर जाता है। किसी की उम्र एक सौ साल या इससे भी ज़्यादा हो सकती है, लेकिन होता यही है कि मौत उसकी ज़िन्दगी का ख़ात्मा कर देती है। बिल्कुल यही मामला और चीज़ों का भी है।

बेदीन लोग तो यह समझते हैं कि ज़िन्दगी के सारे फ़ायदे और नुक़्सान इसी ज़िंदगी तक हैं। जब कोई मर जाता है, मानो बिल्कुल ख़त्म हो जाता है। लेकिन हमारा यानी मुसलमानों का ईमान यह है कि हमारी हक़ीक़ी ज़िन्दगी यह नहीं है, जो हम इस दुनिया में गुज़ारते हैं, बल्कि हक़ीक़ी ज़िन्दगी तो मरने के बाद शुरू होती है। इस दुनिया में तो अल्लाह पाक ने हमें इसलिये भेजा है कि अच्छे-अच्छे काम करके अपनी आख़िरत की ज़िन्दगी, यानी उस ज़िन्दगी को अच्छे-से-अच्छा बनाने की कोशिश करें जो मरने के बाद शुरू होगी। बड़े लोगों ने इस दुनिया को आख़िरत की खेती कहा है, जिस तरह एक किसान फ़सल बोने के मौसम में अपने खेतों में बीज बिखेरता है और फिर उस की हिफ़ाज़त करता है और फिर फ़सल काटता है, बिल्कुल इसी तरह इस दुनिया में हम अच्छे या बुरे कामों के

बीज बोते हैं और आख़िरत की ज़िन्दगी में अपने कामों का फल पाते हैं।

लोग इस बात को मानें या न मानें, लेकिन हम मुसलमानों को यह बात सच्चे दिल से माननी चाहिये कि मरने के बाद अल्लाह हमें फिर ज़िन्दा करेगा और हमारे इन कामों की जांच करके जो हम इस दुनिया में करते हैं, अच्छे काम करने वालों को जन्नत में दाख़िल कर देगा, जो बहुत ही अच्छा ठिकाना है और बुरे काम करने वालों को दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा, जो दहकती हुई आग का गढ़ा है।

जिस दिन सब इन्सानों के अच्छे-बुरे कामों का हिसाब होगा उसे क़ियामत का दिन कहते हैं और जो आदमी क़ियामत को न माने वह मुसलमान नहीं रहता।

ऊपर की इन बातों से इस दुनिया का सही हाल मालूम हो जाता है जिसे बेदीन लोग सब कुछ समझते हैं और यह बात भी समझ में आ जाती है कि असल ज़िन्दगी इस दुनिया से जाने के बाद शुरू होगी और इस तरह हम यह समझने के काबिल हो गये कि जो लोग इस दुनिया के फ़ायदे और नुक़्सान ही को सब कुछ ख़्याल करते हैं, वे बहुत घाटे में हैं, चाहे उनके पास ऐशोआराम का कितना भी सामान जमा हो। सही मायनों में फ़ायदा उन्हें हासिल होगा जो आख़िरत की ज़िन्दगी में अल्लाह की रहमत के हक़दार बन जायेंगे। और प्यारे बच्चो! जो चीज़ इन्सान को अल्लाह की रहमत का सबसे ज़्यादा हक़दार बनायेगी वह नमाज़ है।

नमाज़ पढ़ना किस क़द्र ज़रूरी है, उसके बारे में अल्लाह ने क़ुरआन में फ़रमाया—

"अपनी नमाज़ें बहुत पाबन्दी से पढ़ते रहो ख़ास तौर पर

बीच वाली नमाज़ अल्लाह के आगे इस तरह खड़े हो, जिस तरह ग़ुलाम खड़े होते हैं। बदअमनी का ज़माना हो और चाहे तुम पैदल हो या सवार जिस हालत में भी हो नमाज़ अदा करो। और जब अमन हो जाये तो अल्लाह को इस तरीक़े से याद करो जो उसने तुम्हें सिखाया है, जिससे तुम पहले ना वाक़िफ़ थे।" —2:238-239

नमाज़ हमारे लिये ताक़त और मदद बनती है। अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया—

"ऐ लोगो, जो ईमान लाये हो, सब्र और नमाज़ से मदद लो और अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो सब्र करते हैं।" —2:153

इस आयत से मालूम होता है कि अगर कोई मुसलमान किसी मुसीबत में फंस जाये, तो उसको दूर करने के लिये दो काम करने चाहिये, एक तो यह कि घबरा न जाये, बल्कि हिम्मत से काम लेकर उसे बरदाश्त करे और यह समझे कि अल्लाह मेरा हाल अच्छी तरह जानता है और वह इस परेशानी को दूर कर देने की ताक़त रखता है। इसी को सब्र करना कहते हैं। दूसरी बात यह है कि नमाज़ पढ़ना न छोड़े, पूरे ध्यान से नमाज़ पढ़े और गिड़गिड़ा कर दुआ मांगे। ऐसा करने से अल्लाह ने चाहा तो बड़ी-से-बड़ी मुसीबत दूर हो जायेगी।

1. इस बीच वाली नमाज़ के बारे में हज़रत मौलाना मौजूदी (रह०) ने लिखा है कि बीच, यानी अस्र की नमाज़ भी हो सकती है और हर वह नमाज़ भी जो ठीक वक़्त पर और पूरे ध्यान से पढ़ी जाये।

बद-अमनी के ज़माने में क़स्र, यानी मुख़्तसर नमाज पढ़ने की आसानी है; लेकिन हालात ठीक हों तो पूरी नमाज़ पढ़ी जायेगी।

यूँ तो नमाज़ के अनगिनत फ़ायदे हैं। उनमें से बहुत ही ख़ास फ़ायदे के बारे में अल्लाह ने फ़रमाया –

> "ऐ नबी ! तिलावत करो उस किताब की जो तुम्हारी तरफ़ वह्य के ज़रिये भेजी गई है और नमाज़ क़ायम करो, यक़ीनन नमाज़ बेशर्मी और बुरे कामों से रोकती है।"
>
> –29 : 45

क़ुरआन मजीद की इस आयत में अल्लाह ने यह बात बताई है कि नमाज़ पढ़ने का हुक्म क्यों दिया गया है और अगर कोई ख़ुशनसीब अल्लाह का हुक्म मान ले और पाबन्दी के साथ पाँच वक़्त नमाज़ पढ़ने लगे, तो उसे क्या फ़ायदा हासिल होगा और वह फ़ायदा यह है कि वह बेहयाई और गुनाह के कामों से बच जायेगा।

हम सब जानते हैं कि अल्लाह ने जो कुछ भी फ़रमाया है, बिल्कुल सच है। रही यह बात कि कुछ लोग नमाज़ पढ़ते हैं, लेकिन उन्हें यह फ़ायदा हासिल नहीं होता, तो इसकी वजह यह है कि वे सोच समझकर नमाज़ नहीं पढ़ते, बल्कि नमाज़ की नक़ल करते हैं। इसी वजह से उन्हें वे फ़ायदे हासिल नहीं होते, जो होने चाहियें।

नमाज़ हक़ीक़त में अल्लाह की तारीफ़ (अल्लाह की शान और बड़ाई बयान करना) और दुआ का नाम है। जब कोई आदमी प्यारे नबी (सल्ल०) के बताये हुये तरीक़े के मुताबिक़ वुज़ू करके, क़िबले की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ की नियत बांधेगा और सजदे और रुकू करेगा, तो हम यह तो कहेंगे कि वह नमाज़ पढ़ रहा है, लेकिन उसकी नमाज़ सही मायनों में उस वक़्त नमाज़ होगी, जब वह यह भी समझ रहा होगा कि मैं अपने रब के सामने खड़ा हूँ, जो सबसे ज़्यादा शान और बुज़ुर्गी वाला है और मुझे अपने सब कामों के लिये सिर्फ़ उसी के आगे अपना हाथ फैलाना चाहिये।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया —

> "जब तुम नमाज़ पढ़ो तो ख़्याल करो कि मानो तुम अल्लाह को देख रहे हो और अगर ऐसा न हो सके तो यह तो ज़रूर समझो कि अल्लाह तुम्हें देख रहा है।"

प्यारे नबी (सल्ल०) की यह हदीस हदीसों की किताब बुख़ारी शरीफ़ और दूसरी किताबों में है और इसका मतलब यह है कि नमाज़ पढ़ने वाला बे-सोचे समझे अल्फ़ाज़ न दोहराता रहे, बल्कि अल्लाह की शान, बड़ाई और बुज़ुर्गी सच्चे दिल से माने और यह समझे कि मैं उसका एक मामूली-सा बन्दा हूँ। सिर्फ़ अल्लाह ही है, जो मेरी तमाम मुसीबतों को दूर सकता है।

इसी तरह नमाज़ पढ़ने के लिये यह बात ज़रूरी है कि नमाज़ में क़ुरआन की जो आयतें पढ़ी जाती हैं। उनका मतलब सीख लिया जाये, जो ज़्यादा मुश्किल काम नहीं है। बच्चों का ज़ेहन तेज़ होता है। वे थोड़ी-सी कोशिश भी करेंगे तो नमाज़ में पढ़ी जाने वाली सूरतों का मतलब बिल्कुल आसानी से सीख लेंगे और फिर उन्हें नमाज़ पढ़ने का सही फ़ायदा हासिल होगा, जो इतना ज़्यादा है कि दुनिया के तमाम ख़ज़ाने भी इसके सामने कुछ नहीं।

सच बोलना

क़ुरआन ने सच बोलने वालों की तारीफ़ की है और झूठ बोलने वालों के बारे में बताया है कि वे सख़्त सज़ा पायेंगे। सच बोलने वालों को जो इनाम मिलेंगे, उनके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया –

> "यह वह दिन है (क़ियामत का दिन) जिसमें सच्चों को उनकी सच्चाई बहुत फ़ायदा देगी। उनके लिये ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। यहाँ वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से राज़ी, यही बड़ी कामियाबी है।" –5:119

इस आयत से इस मरतबे और शान का अंदाज़ा होता है, जो अल्लाह अपने उन बन्दों को देगा जो सच्चे होंगे। आख़िरत की ज़िन्दगी के फ़ायदे के अलावा इस दुनिया में भी ऐसे लोगों को बहुत इज़्ज़त और कामियाबी नसीब होती है, जो झूठ नहीं बोलते।

झूठ हक़ीक़त में एक ऐसी बुराई है, जिसकी वजह से ज़िन्दगी में बहुत बिगाड़ फैलता है और जो इन्सान के अन्दर बुज़दिली की वजह से पैदा होती हैं।

झूठी बात उस बात को कहा जाता है, जिसमें असल बात को छिपाया गया हो और किसी बे-क़ुसूर पर इल्ज़ाम लगा दिया गया हो। मिसाल के तौर पर नन्हें मियाँ के हाथ से शीशे का गिलास गिर कर टूट गया और जब अम्मी जान ने पूछा कि गिलास किसने तोड़ा है, तो साफ़ इंकार कर दिया कि मैंने तो नहीं तोड़ा, या कह दिया यह तो मुन्नी बाजी ने तोड़ा होगा, वही पानी पी रही थीं।

अच्छी बात तो यह थी कि नन्हें मियां अपनी ग़लती मान लेते और अम्मी जान को बता देते कि गिलास मेरे हाथ से गिर कर टूट गया है, ऐसी सूरत में अम्मी की परेशानी उसी वक़्त ख़त्म हो जाती। उन्हें मालूम हो जाता कि नुक़्सान किस तरह हुआ है, लेकिन नन्हें मियां ने सज़ा के डर से ऐसा न किया। दूसरे शब्दों में वह बुज़दिल होने की वजह से ऐसा न कर सके और उनके झूठ से गिलास टूट जाने का मामला ख़त्म होने के बजाय और उलझ गया। वह इस तरह कि अम्मी ने घर के दूसरे बच्चों पर शक किया या बेगुनाह मुन्नी की शामत आई, जिस पर नन्हें मियाँ ने इल्ज़ाम लगाया था।

बच्चों ने अपनी बेक़ुसूरी साबित करने के लिए शोर मचाया और इस तरह घर में अच्छा ख़ासा हंगामा मच गया। ग़ौर किया जाये तो दुनिया में जितने झगड़े और ख़राबियाँ नज़र आती हैं, वे झूठ या ऐसी ही किसी बुराई की वजह से पैदा होती हैं। अगर सब सच बोलें और इसी तरह के दूसरे गुनाह न करें तो हमारी ज़िन्दगी हर तरह की बुराइयों से पाक हो जाये।

दुनिया में बिगाड़ फैलने के अलावा झूठ और दूसरे गुनाहों में एक बड़ी ख़राबी यह भी है कि यह गुनाह करने वाले जो फ़ायदा हासिल करने के लिये गुनाह करते हैं, वह उन्हें हासिल नहीं होता। यह तो हो सकता है कि कुछ दिन किसी को मालूम न हो कि नन्हें मियाँ झूठे हैं या सच्चे, लेकिन आख़िर यह भेद खुल ही जाता है। बुज़ुर्गों ने कहा है कि सौ दिन चोर के एक दिन साध का। इस कहावत का मतलब यही है कि गुनाह करने वाला आख़िरकार पकड़ा जाता है और उसके बारे में सब जान जाते हैं कि यह तो बहुत ज़्यादा गप्पी और धोखेबाज़ है। अब वह अपनी तरफ़ से कितना ही अच्छा बने, अपने शरीफ़ और नेक होने का यक़ीन दिलाये, लेकिन किसी को भरोसा नहीं होता, बल्कि हालत यह

हो जाती है कि दूसरों की ग़लतियाँ भी उसी के ज़िम्मे पड़ती हैं। ग़लती किसी ने भी की हो सबसे पहले उसी की तरफ़ ध्यान जाता है। जैसे पुलिस सबसे पहले नामी गुंडों से पूछताछ करती है।

बचपन में तो ख़ैर यह मामला इससे आगे नहीं बढ़ता कि किसी बच्चे ने झूठ बोला और अम्मी या अब्बू ने डाँट-डपट कर छोड़ दिया, लेकिन बड़ी उम्र में ऐसी आदतों से बहुत नुक़्सान उठाना पड़ता है। ऐसा आदमी किसी दफ़्तर में काम कर रहा हो या ताजिर हो, सब उसे एक बेकार ओर बेहूदा आदमी समझते हैं। उसकी बात का यक़ीन नहीं करते, न उसके साथ मिल कर कोई कारोबार करने के लिये तैयार होते हैं। सब यही कहते हैं कि ख़ुदा जाने इसकी कौन-सी बात सच है, कौन-सी झूठ और अल्लाह जाने यह कब किस तरह का नुक़्सान पहुँचा दे।

ख़ुदा न करे, अगर किसी बच्चे को झूठ बोलने की आदत पड़ गई है, तो उसे चाहिये कि यह आदत फ़ौरन छोड़ दे। अगर उसने ऐसा न किया तो होते-होते यह ऐसी पक्की हो जायेगी कि कोशिश करने के बाद भी न छूट सकेगी और उसे सारी ज़िन्दगी इसका बुरा नतीजा भुगतना पड़ेगा। न वह तरक़्क़ी कर सकेगा और न उसे इज़्ज़त हासिल होगी। -

इन सब बातों के अलावा झूठ के बहुत बड़े गुनाह होने का एक सुबूत यह भी है कि कोई आदमी भी गह नहीं चाहता कि उससे झूठ बोला जाये। यहाँ तक कि जो लोग ख़ुद झूठ बोलते हैं, वे भी यह नहीं चाहते कि उनके सामने कोई झूठी बात कहे और उनके साथ जो मामला किया जाये उसमें किसी तरह की बेईमानी न हो और यह बात इस वजह से होती है कि हर कोई उस नुक़्सान से बचना चाहता है, जो झूठ और दूसरे गुनाहों की वजह से यक़ीनी तौर पर पहुँचता है।

ग़ौर करें तो हमारी दुनिया का सारा कारोबार सच और ईमानदारी की वजह से चल रहा है। स्कूल में जो मास्टर साहब पढ़ाते हैं, वे अपना काम इसलिये पाबन्दी से करते हैं कि वायदे के मुताबिक़ उन्हें हर महीने एक ख़ास तारीख़ पर तनख़्वाह मिल जाती है। इसके बजाय अगर हुकूमत वायदे के मुताबिक़ तनख़्वाह न दे तो मास्टर साहब बच्चों को पढ़ाना छोड़ देंगे और स्कूल बन्द हो जायेगा।

बस यही हाल दुनिया के सारे कामों का है, लोग अपने वायदे पूरे करते हैं, (वायदा पूरा करना भी सच बोलना ही है) दूसरों के वायदों पर यक़ीन करते हैं और सब काम चल रहे हैं। अगर ख़ुदा न करे ऐसी सूरत पैदा हो जाये कि हर आदमी झूठ बोले और दूसरों को धोखा देने लगे, तो सारा इन्तज़ाम ही उलट-पलट जाये।

अल्लाह पाक ने झूठ को एक बड़ा गुनाह क़रार दिया है, तो इसकी वजह यही है कि यह बहुत तबाही फैलाने वाली आदत है। बच्चों को चाहिये कि उसके पास भी न जायें। यक़ीनन यह एक बहुत ही बड़ा गुनाह है। अल्लाह ने झूठों पर लानत भेजी है, झूठ छोटा हो या बड़ा इससे बचना ज़रूरी है।

ग़ीबत से बचो

अगर कोई आदमी हमारे पास न हो और हम उसकी बुराइयाँ करने लगें तो उसे ग़ीबत यानी पीठ पीछे बुराइयाँ करना कहा जायेगा और यह एक बहुत बड़ा गुनाह है। क़ुरआन में है–

> "और तुम में से कोई किसी की ग़ीबत न करे। क्या तुम्हारे अन्दर कोई ऐसा है, जो अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाना पसन्द करेगा? याद रखो तुम ख़ुद इससे घिन खाते हो। अल्लाह से डरो अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला और रहम फ़रमाने वाला है।" —49 : 12

इस आयत से यह बात मालूम होती है कि अल्लाह पाक ग़ीबत यानी पीठ पीछे बुराइयां बयान करने को सख़्त नापसन्द करता है। उसने उसे इतना बड़ा गुनाह और नफ़रत दिलाने वाली बात बताया है, मानो कोई अपने मरे हुये भाई का गोश्त खा रहा हो।

सही इस्लामी अख़लाक़ तो यह है कि अगर अपने किसी भाई में किसी तरह की बुराई मालूम हो, तो उसे ऐसे तरीक़े से समझाया जाये कि वह शर्मिन्दा न हो और उसकी बुराई को छिपाया जाये। जो लोग ऐसा नहीं करते वे इस्लामी अख़्लाक़ से दूर हैं।

किसी को उसकी ग़लती बताने के बारे में एक क़िस्सा बयान किया गया है, जो इस तरह है। एक दिन हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) ने जो अभी कम उम्र बच्चे थे, मस्जिदे नबी में एक बूढ़े को ग़लत वुज़ू करते हुये देखा। यह बात ज़रूरी थी कि

उसे सही तरीक़ा बताया जाये। इसलिये दोनों भाई उस बूढ़े आदमी के पास गये और बहुत ज़ोर से कहा, "बाबा जी! हम वुज़ू करते हैं। अगर कोई ग़लती करें तो मेहरबानी करके बता दीज़ियेगा।" यह कहकर हज़रत इमाम हसन (रज़ि०) ने बिल्कुल सही तरीक़े से वुज़ू किया और चूँकि बूढ़ा यह जानता था कि ये बच्चे अल्लाह के नबी (सल्ल०) के नवासे और हज़रत अली (रज़ि०) के बेटे हैं और दीन की सारी बातें अच्छी तरह से जानते हैं, इसीलिये उसे अपनी ग़लती का पता चल गया।

अगर कोई बद-अख़्लाक़ आदमी होता, तो ग़लत तरीक़े से वुज़ू करते देख कर डांटता कि शर्म नहीं आती, दाढ़ी सफेद हो गई और अभी तक मालूम नहीं कि वुज़ू किस तरह किया जाता है। बेशक उस आदमी की नियत यह होती कि बूढ़े को अपनी ग़लती मालूम हो जाये और वह वुज़ू करने का ठीक तरीक़ा सीख ले, लेकिन इस तरह समझाने से बूढ़े को बहुत दुख होता और इस प्रकार समझाने वाले की नेकी ख़त्म हो जाती।

ग़ीबत करने के बारे में कुछ लोग यह ख़्याल करते हैं कि जब एक आदमी में यह ख़राबी मौजूद है, तो उसे बयान करने में क्या हरज है और उसकी इस बुराई को उसके सामने बयान किया जाये या पीठ पीछे, उससे क्या फ़र्क़ पड़ेगा? बच्चों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि यह बात भी बिल्कुल ग़लत है।

बताया जाता है कि किसी सहाबी ने रसूल (सल्ल०) से यही बात कही कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! जब किसी आदमी के अन्दर कोई बुराई मौजूद है, तो उसे बयान करने में क्या हर्ज है? जवाब में प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अगर किसी में कोई बुराई है और तुम उसकी ग़ैर मौजूदगी में वह बुराई दूसरों को बताओ तो यही

ग़ीबत है। अगर वह बुराई उसमें न हो और तुम उसके सिर थोपो तो यह तोहमत और इल्ज़ाम होगा।

क़ुरआन पाक की आयत और रसूल (सल्ल०) की इस हदीस से ग़ीबत के बहुत बड़ा गुनाह होने का हाल अच्छी तरह मालूम हो जाता है। बच्चों को पक्का इरादा कर लेना चाहिये कि वे किसी हालत में अपने किसी साथी की ग़ैर मौजूदगी में उसकी बुराई न करेंगे और किसी में कोई ग़लती देखेंगे तो उसे इस तरह समझायेंगे कि वह शर्मिन्दा न हो।

ग़ीबत के बहुत बड़ा गुनाह होने को इस तरह भी समझा जा सकता है कि जब किसी की ग़ीबत की जायेगी तो सुनने वालों के दिलों में उसके ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा होगी और ख़ुद उसे इस बात पर ग़ुस्सा आयेगा कि फ़लाँ आदमी मेरी बुराइयाँ बयान करता है और इस तरह आपस में बिगाड़ पैदा हो जायेगा। इस गुनाह के नतीजे में कभी-कभी तो ख़ून-ख़राबे तक नौबत पहुँच जायेगी और जान-माल का बहुत बड़ा नुक़्सान हो जायेगा। इस नुक़्सान से बचने का सबसे अच्छा तरीक़ा यही है कि अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माना जाये और पीठ पीछे किसी की बुराई बयान न की जाये।

कपड़े और बदन की सफ़ाई

हमारे दीन इस्लाम ने कपड़े और बदन को साफ़ और पाक रखने को बहुत ज़रूरी बताया है। उसके ज़रूरी होने का इस बात से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि अल्लाह ने अपने रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को इसका हुक्म दिया। फ़रमाया–

> "ऐ ओढ़ लपेट कर लेटने वाले! उठो और ख़बरदार करो (अल्लाह के बन्दों तक उसका पैग़ाम पहुंचाओ) और अपने रब की बड़ाई बयान करो और अपने कपड़े पाक रखो और गंदगी से दूर रहो।" –74 : 1-5

प्यारे नबी (सल्ल०) के बारे में यह बात सब जानते हैं कि आप से ज़्यादा पाक और साफ़ रहने वाला इन्सानों में कोई भी न था, लेकिन इसके बाद भी अल्लाह ने आपको हुक्म दिया कि अपने कपड़ों को पाक रखें और गंदगी से दूर रहें। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के हवाले से यह हुक्म सही मायनों में हमारे यानी तमाम मुसलमानों के लिये है और इस पर अमल करना इसलिये ज़रूरी है कि यह अल्लाह का हुक्म है और उसकी सच्ची किताब क़ुरआन में इसकी हिदायत की गयी है।

जो आदमी भी इस बात पर ग़ौर करेगा कि कामियाबी हासिल करने का अच्छा तरीक़ा कौन-सा है? तो उसे मालूम होगा कि जो लोग मैले-कुचैले और गंदे रहते हैं, वे किसी तरह की भी कामियाबी हासिल नहीं कर सकते। कामियाबी उनका हिस्सा है, जो ख़ूब चाक-चौबन्द और साफ़-सुथरे रहते हैं। चाक-चौबन्द वही बन सकता है, जो पाक और साफ़ रहे।

गन्दा और मैला रहना इस बात की निशानी होती है कि यह आदमी बहुत बेपरवाह और निकम्मा है और जो ऐसा हो वह किसी तरह की कामियाबी कैसे हासिल कर सकता है। यह इनाम तो उन लोगों को मिलता है, जो बचपन की उम्र से ही अपनी हालत सुधारने की कोशिश करते हैं।

उन्हें स्कूल में दाख़िल किया जाता है, तो ख़ूब मेहनत से अपना सबक़ याद करते हैं और उस्तादों का हुक्म मानते हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद किसी जगह नौकरी करते या कोई काम शुरू करते हैं, तो उसमें पूरी तरह जान खपाते हैं। ज़ाहिर है जो ऐसा मेहनती होगा, वह अपने कपड़ों और बदन की सफ़ाई का भी ज़रूर ख़्याल रखेगा। इसी वजह से ख़ूब मेहनती और क़ाबिल होने के साथ ऐसे लोग साफ़-सुथरे भी होते हैं। बल्कि सही बात तो यह है कि साफ़-सुथरा रहने की वजह से ही उनमें यह अच्छाई पैदा होती है कि वे ख़ूब क़ाबिल बनते और सुस्ती को अपने पास नहीं फटकने देते।

यह बात भी हक़ीक़त में हमारे दीन के सच्चा दीन होने का सुबूत है कि उसने पाक और साफ़ रहने पर बहुत ज़ोर दिया है। नमाज़ पढ़ना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है और यह उसी वक़्त पढ़ी जा सकती है, जब आदमी के कपड़े और नमाज़ पढ़ने की जगह पाक और साफ़ हो। इसके अलावा उसने वुज़ू भी किया हो जिसमें खुले रहने वाले बदन के सारे हिस्से कुहनियों तक हाथ, पूरा चेहरा और दोनों पाँव अच्छी तरह धोये जाते हैं और सिर का मसह किया जाता है।

इसी तरह जुमा के दिन नहाना और साफ़ कपड़े पहन कर नमाज़ के लिये जाना ज़रूरी है, बल्कि प्यारे नबी (सल्ल०) का तरीक़ा तो ख़ुशबू लगाना भी है। दोनों ईदों पर भी यह बात ज़रूरी है कि हर मुसलमान नहाये। अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने, ख़ुशबू लगाये और

फिर अल्लाह की तारीफ़ करता हुआ नमाज़ पढ़ने के लिये ईदगाह जाये।

इन सब बातों से अंदाज़ा किया जा सकता है कि एक सच्चा मुसलमान गन्दा और मैला रह ही नहीं सकता। क़ुरआन की एक आयत में अल्लाह ने पाकीज़गी की तारीफ़ इस तरह की—

> "और कामियाब हो गया वह, जिसने पाकी इख़्तियार की।"
> —87 : 14

यहाँ पाकी का मतलब दिल और बदन दोनों की पाकी है। जिस तरह कुछ लोगों का बदन और कपड़े मैले होते हैं, उसी तरह कुछ ऐसे बदनसीब भी होते हैं, जिनका दिल गन्दा और मैला होता है। दिल पर यह गंदगी हक़ीक़त में बुरे ख़यालात की वजह से चढ़ती है।

किसी अक्लमन्द ने इन्सान के दिल को ऐसे फूल की तरह बताया है, जिसकी सब पत्तियाँ ख़ूब खिली हुई हों, तरोताज़ा और ख़ुशबूदार हों, लेकिन ऐसे प्यारे दिल का मालिक इन्सान जब बुराई का कोई काम करता या कोई बुरी बात सोचता है, तो इस फूल की एक पत्ती मैली होकर मुरझा जाती है। अब अगर उसने अपनी ग़लती पर ग़ौर करके तौबा करली यानी अल्लाह से माफ़ी मांग ली और पक्का इरादा कर लिया कि अब कभी ऐसी ग़लती नहीं करेगा, तो दिल के फूल की बाक़ी पत्तियाँ ठीक हालत में रहेंगी, लेकिन अगर वह ऐसा न कर सका। बुराई के रास्ते पर ही आगे बढ़ता रहा, तो एक-एक करके सारी पत्तियाँ मैली होकर मुरझा जाती हैं और उसकी हालत ऐसी बुरी हो जाती है कि वह बुराई और भलाई में फ़र्क़ महसूस नहीं कर सकता। कोई बुरा काम करता है, तो उसे अच्छा समझता है और इस प्रकार वह बिल्कुल तबाह हो जाता है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया—

"जब कोई आदमी कोई बुरा काम करता है, तो उसके दिल पर काला नुक़्ता पड़ जाता है और वह ऐसे ही काम करता रहे तो उसके दिल की यह हालत हो जाती है कि बिल्कुल काला हो जाता है।" —तिमिर्ज़ी

सियाह दिल उस आदमी को कहा जाता है, जो बहुत ही ज़ालिम हो, बुराइयाँ करते चले जाने से आदमी इस तरह बुरा बन जाता है कि सब उससे नफ़रत करने लगते हैं और उससे बड़ा नुक़्सान उसे यह पहुंचता है कि वह अल्लाह के ग़ुस्से का हक़दार बन जाता है।

प्यारे बच्चों को चाहिये कि पाकी की बरकतों और फ़ायदों और नापाकी और गन्दगी के नुक़्सान को अच्छी तरह समझें और जहाँ तक हो सके अपने ख़्यालात, अपने बदन और अपने कपड़ों को पाक और साफ़ रखें।

हो सकता है कुछ बच्चों के दिल में यह ख़्याल आये कि ऐसा साफ़-सुथरा रहने के लिये तो ख़ूब अमीर होना बहुत ज़रूरी है। लेकिन इनका यह ख़्याल ठीक नहीं, अपने दिल, अपने बदन और अपने कपड़ों को पाक रखने के लिये जिस चीज़ की ज़रूरत है, वह है पक्का इरादा और मेहनत।

ग़रीब घरानों में ऐसे बहुत से ख़ुशनसीब बच्चे मिल जायेंगे जो फूलों की तरह साफ़ और पाक रहते हैं। बेशक उनके कपड़े मामूली होते हैं। लेकिन उन पर कोई दाग़-धब्बा नहीं होता। स्कूल की ड्रेस हो या घर में पहनने के कपड़े सब साफ़ मिलेंगे। वे स्कूल जाते हैं, तो घर पहनने के कपड़े सलीक़े से खूंटी पर टांग जाते हैं। स्कूल से आते हैं, तो ड्रेस को उसी तरह हिफ़ाज़त से रख देते हैं। न मैले रहने वाले बच्चों को दोस्त बनाते हैं और न ऐसे खेल खेलते हैं, जिनमें कपड़े और बदन

मैला हो जाये।

सही बात तो यह है कि यह अमीर और ग़रीब होने का मामला नहीं है, बल्कि सलीक़े और ध्यान की बात है। बच्चों को चाहिये कि रोज़ाना नहायें, अपने दाँत साफ़ करें और कपड़ों को मैला और दाग़दार न होने दें। किसी वजह से कोई दाग़-धब्बा लग भी जाये तो फ़ौरन धो डालें।

इसी तरह उन कामों से दूर रहें, जिन्हें दुनिया के तमाम शरीफ़ लोग बुरा समझते हैं। ऐसे काम करना तो अलग उनका ख़्याल भी अपने दिल में न आने दें और फिर देखें कि उनकी ज़िन्दगी में कैसी बहार आती है।

फ़ुज़ूलख़र्ची बुरी आदत है

जो बातें आदमी को बहुत नुक़्सान पहुंचाती हैं, उनमें से एक फ़ुज़ूलख़र्ची है। फ़ुज़ूलख़र्ची अपने माल को ज़रूरत के बग़ैर और ग़लत कामों में ख़र्च करने को कहते हैं। जैसे कि स्कूल का काम करने के लिये एक पैन्सिल काफ़ी है, लेकिन कोई बच्चा सिर्फ़ अपनी बड़ाई जताने के लिये तीन-चार पैन्सिलें ख़रीद ले और बे-ज़रूरत उनका सिक्का निकाल-निकालकर उन्हें बरबाद करता रहे, तो उसे एक फ़ुज़ूलख़र्च लड़का कहेंगे।

चीज़ें ख़रीदने और इस्तेमाल करने के बारे में यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि अल्लाह ने इस दुनिया में जो कुछ भी पैदा किया है, किसी एक ख़ानदान या क़बीले के लिए पैदा नहीं किया, बल्कि सबके लिये पैदा किया है और यह बात ज़रूरी है कि हर आदमी को उसका पूरा हिस्सा मिलेगा।

रही यह बात कि कुछ लोग ग़रीब हैं, कुछ अमीर, ग़रीब अपनी जायज़ ज़रूरतें भी पूरी नहीं कर सकते और अमीर ज़रूरत की ज़्यादा चीज़ें ख़रीद सकते हैं, तो बात यह है कि इन्सानों में फ़र्क़ ज़िन्दगी गुज़ारने के ग़लत तरीक़ों की वजह से पड़ गया है। हुआ यह है कि चालाक और ख़ुदगरज़ लोगों ने ज़ुल्म और मक्कारी से अपनी ज़रूरत से ज़्यादा चीज़ों पर क़ब्ज़ा जमा कर अपने बहुत-से भाइयों को उनके हक़ से महरूम कर दिया और फिर ऐसे क़ायदे-क़ानून बना दिये कि जो लोग अपने हक़ से महरूम हो गये हैं, वे महरूम ही रहें और जो फ़ायदे उन्होंने ख़ुद समेट लिये हैं, वे उन्हें हासिल रहें।

हमारे दीन-इस्लाम ने जिस तरह और बहुत-सी बुराइयों को ख़त्म किया है, इस बे-इन्साफ़ी को भी मिटाया है। अतः इस पाक दीन ने यह बात ज़रूरी क़रार दी है कि जो मुसलमान अमीर हैं, वे अपने ग़रीब भाइयों की मदद करें। इसकी पहली शक्ल तो ज़कात है। अमीर मुसलमानों को अपने माल में से चालीसवां हिस्सा यानी ढाई प्रतिशत हर साल निकालना पड़ता है और यह माल ग़रीबों की मदद और दीन को तरक़्क़ी देने के कामों में ख़र्च किया जाता है।

इस्लाम में ज़कात का दर्जा इबादत का है। यानी जिस तरह नमाज़ अदा करना ज़रूरी है, उसी तरह ज़कात अदा करना भी ज़रूरी है। हुकूमत ज़कात का रुपया ज़बरदस्ती वुसूल कर सकती है।

ज़कात के अलावा सूद के बग़ैर क़र्ज़ देना, सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी के लिये मदद करना और ज़ाहिर किये बग़ैर किसी तरह का फ़ायदा पहुंचा देना भी ज़रूरी है और ऐसा करते हुये यह बात भी बहुत ज़रूरी है कि जिस आदमी की मदद की जाये उस पर एहसान न जताया जाये।

बहरहाल हम ज़िक्र कर रहे थे फ़ुज़ूल ख़र्ची का। क़ुरआन शरीफ़ ने उसे बहुत बड़े गुनाहों में शामिल किया है। फ़रमाया है–

> "ऐ लोगो! हर इबादत के मौक़े पर पूरा लिबास पहना करो और खाओ-पियो, लेकिन फ़ुज़ूलख़र्ची न करो, अल्लाह फ़ुज़ूलख़र्ची करने वालों को पसन्द नहीं करता।" –7 : 31

एक दूसरी आयत में फ़रमाया–

> "रिश्तेदारों को उनका हक़ दो और ग़रीब और मुसाफ़िर को उसका हक़। फ़ुज़ूलख़र्ची न करो। फ़ुज़ूलख़र्च करने वाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब का

नाशुक्रा है।"   —17 : 26-27

अल्लाह पाक ने फ़ुज़ूलख़र्ची करने वालों को "शैतान का भाई" कहा है और इससे इस बात का पता चलता है कि यह कितना बड़ा गुनाह है। बच्चों को चाहिये पक्का इरादा कर लें कि वे यह गुनाह किसी भी हालत में न करेंगे।

रह गई यह बात कि फ़ुज़ूलख़र्ची क्या है? तो इस सिलसिले में यह बात भी पूरी तरह समझ लेनी चाहिये कि अपनी हैसियत के मुताबिक़ रहने के लिये अच्छा मकान बनाना, अच्छा खाना खाना और अच्छे कपड़े पहनना फ़ुज़ूलख़र्ची न कहलायेगा। क़ुरआन हमें यह बताता है कि अल्लाह ने जो नेमतें दी हों उन्हें इस्तेमाल करना ज़रूरी है, ऐसा न किया जाये, तो यह कंजूसी होगी और यह भी फ़ुज़ूलख़र्ची की तरह एक बड़ा गुनाह है।

फ़ुज़ूलख़र्ची की हद में वे काम दाख़िल हो जायेंगे, जो अपने आप को बड़ा ज़ाहिर करने या लोगों पर रोब जमाने के लिये किये जायेंगे। मिसाल के तौर पर घर के सब लोग चार कमरों के मकान में इज़्ज़त और आराम से रह सकते हैं, लेकिन इस ख़्याल से दस कमरों का मकान बनवाया जाये कि लोग देखेंगे, तो तारीफ़ करेंगे और बड़ा आदमी समझेंगे या इस ख़्याल से बहुत अच्छे कपड़े का लिबास बनवाया जाये कि वह पहन कर दूसरों से अधिक अच्छे और अमीर माने जायेंगे।

मकान, ख़ुराक और लिबास इंसान की ऐसी ज़रूरतें हैं कि ये ज़रूर पूरी होनी चाहियें, उनमें कमी आयेगी तो परेशानी का सामना होगा, लेकिन इन्हें जायज़ ज़रूरत पूरी होने की हद में रहना चाहिये। अगर दूसरों से बड़ा बनने का ख़्याल दिल में पैदा हो जाये, तो समझ लेना चाहिये कि हमारे दिमाग़ और दिल में शैतान आ घुसा है और हम

से ऐसे काम करवाना चाहता है, जिनकी वजह से बड़ा बनने का ख़्याल दिल में पैदा हो जाये। ऐसी सूरत में हमारा रब हमसे नाराज़ हो जायेगा और हम सज़ा के हक़दार बन जायेंगे।

जो बच्चे अपने अम्मी और अब्बू को परेशान करते हैं कि उनके लिये अच्छे-से-अच्छे कपड़े का लिबास बनवाया जाये और अच्छे क़िस्म के जूते ख़रीदे जायें और कई-कई जोड़े ख़रीदे जायें, वे फ़ुज़ूलखर्ची करने वाले गिरोह में शामिल हैं। उन्हें चाहिए कि अल्लाह के हुक्मों पर ग़ौर करें और सादा ज़िन्दगी गुज़ारने की आदत डालें। हक़ीक़त यह है कि इन्सान को सच्ची इज़्ज़त और सच्चा आराम अच्छी आदतों की वजह से ही मिलता है। सिर्फ़ अच्छा लिबास पहन लेने से नहीं मिलता। जिस तरह यह बात सच्ची है कि गधे पर किताबें लाद देने से वह आलिम नहीं बन जाता, उसी तरह यह बात भी बिल्कुल सच्ची है कि सिर्फ़ अच्छे मकान में रहने और अच्छे कपड़े पहन लेने से आदमी इज़्ज़त वाला नहीं बन जाता। सच्ची इज़्ज़त अच्छे काम करने से मिलती है।

जो लोग ज़रूरत से ज़्यादा ख़र्च करते हैं, वे दूसरों का हक़ मारते हैं। इस दुनिया का काम चलाने के लिये अल्लाह ने इंसान-इंसान की हालत में फ़र्क़ रखा है, लेकिन इस फ़र्क़ के बावजूद इंसान होने में सब बराबर हैं और सब इस बात के हक़दार हैं कि उनकी सब ज़रूरतें आसानी और इज़्ज़त के साथ पूरी हों और उनकी ये ज़रूरतें पूरी करने की ज़िम्मेदारी उन लोगों पर डाली गई है, जिनके पास उनकी ज़रूरत से ज़्यादा माल है।

हमारी इस दुनिया की मिसाल एक कारख़ाने की-सी है कि जिसमें कोई मालिक है, कोई मैनेजर है, कोई ख़ज़ांची है और कोई मज़दूर और कारीगर है, जिस तरह कारख़ाने का मालिक ख़ज़ांची या मैनेजर

को सब कारीगरों और मज़दूरों की तनख़्वाहों का रुपया दे देता है कि वह मुक़र्रर तारीख़ पर सब की तनख़्वाहें अदा कर दे, बिल्कुल उसी तरह दुनिया के मालिक अल्लाह ने कुछ लोगों को मैनेजर या ख़ज़ांची का दर्जा दे दिया है और ताकीद कर दी है कि वह इस रुपये पैसे को जो उनके पास है, अपना माल न समझें, बल्कि अल्लाह का माल समझें और हक़दारों को उनका हक़ दें।

क्या कोई समझदार मैनेजर या ख़ज़ांची यह कर सकता है कि कारख़ाने के कारीगरों और मज़दूरों की तनख़्वाहों के रुपयों को अपना निजी माल समझ ले और किसी को भी कुछ न दे? हरगिज़ नहीं। और अगर कोई नादान ख़ज़ांची ऐसा करेगा तो उसे गिरफ़्तार करके हवालात में बंद कर दिया जायेगा। उस पर मुक़दमा चलेगा और जब उसका जुर्म साबित हो जायेगा, तो जेलख़ाने भेज दिया जायेगा।

फ़ुज़ूलख़र्ची करने वालों और कंजूसों का हाल भी ऐसा ही होगा। वह अपने गुनाहों की सज़ा पायेंगे। हमें अल्लाह से दुआ करनी चाहिये कि वह सबको इन बुराइयों से बचाये।

चुग़ली खाना

बच्चों ने सुना होगा—– "चुग़लख़ोर, ख़ुदा का चोर।" यह बात यूँ ही नहीं कही जाती, बल्कि बिल्कुल सच्ची है। चुग़लख़ोर वाक़ई ख़ुदा का चोर बन जाता है। वह इस दुनिया में भी ज़लील और बेइज़्ज़त होता है और आख़िरत में भी सज़ा पायेगा।

चुग़ली खाना ग़ीबत ही की एक क़िस्म है, जिसका हाल हम लिख चुके हैं। इन दोनों में फ़र्क़ यह है कि ग़ीबत तो कभी-कभी किसी मक़सद के बग़ैर भी की जाती है। बातों-बातों में किसी का ज़िक्र आ गया और मजलिस में बैठे हुए लोगों ने उसकी अच्छाई-बुराई बयान करना शुरू कर दी। ऐसा करते हुए लाज़मीतौर पर उनका मक़सद यह नहीं होता कि उसे कोई बड़ा नुक़्सान पहुँचाए। लेकिन चुग़लख़ोर की नियत लाज़मी तौर पर दूसरे को नुक़्सान पहुँचाने की होती है और इस तरह यह एक ग़ीबत से भी बड़ा गुनाह है।

ग़ीबत की तरह चुग़ली के बारे में भी कहा जा सकता है कि यह किसी पर इल्ज़ाम लगाना नहीं होता, बल्कि किसी ने कोई ग़लती की होती है, तो उसके बारे में दूसरे को बता दिया जाता है। बेशक ऐसा ही होता है। चुग़लख़ोर किसी पर इल्ज़ाम नहीं लगाता, लेकिन इसके बावजूद सख़्त गुनाह करता और सज़ा का हक़दार बन जाता है।

वजह यह है कि चुग़ली खाने वाला उस अच्छी आदत को छोड़ देता है, जो अल्लाह को पसन्द है और आम बोलचाल में जिसे इस्लामी अख़्लाक़ कहा जाता है। इस इस्लामी अख़लाक़ के बारे में क़ुरआन मजीद ने हमें बताया है कि लोगों के ऐब ढूढ़ते न फिरो और अगर

किसी की कोई बुराई मालूम भी हो जाए तो उसे छिपाओ। ढिंडोरा पीटते न फिरो कि देखो लोगो, फ़लाँ आदमी तो ऐसा और ऐसा है। हां, अख़्लाक़ और नर्मी के साथ समझाने की कोशिश ज़रूर करनी चाहिये!

हमारा दीन जादू-मन्तर या टोने-टोटके को बिल्कुल नहीं मानता कि फूँक मारी और काम हो गया। उसने तो साफ़ तौर पर बताया है कि जिस चीज़ का कुछ नतीजा निकलता है, वह इंसान का अमल है। अगर वह अच्छे काम करे तो अल्लाह की रहमत का हक़दार बन जाता है। बुरे काम करे तो सज़ा पाता है। क़ुरआन शरीफ़ में ऐसी बहुत-सी आयतें हैं, जिनमें यह बताया गया है कि एक मुसलमान को कैसा होना चाहिये। एक जगह फ़रमाया गया—

> ''रहमान के सच्चे बन्दे वे हैं, जो ज़मीन पर नर्मी से चलते हैं और जाहिल उनके मुँह आयें, तो कह देते हैं, तुम को सलाम हो। जो अपने रब के आगे सजदे और क़याम करते हुये रातें गुज़ार देते हैं, जो दुआएं करते हैं कि ऐ हमारे रब! हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले। उसका अज़ाब तो बड़ा ही सख़्त है और जो बहुत बुरा ठिकाना है। और जो ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूलख़र्ची करते हैं और न कंज़ूसी करते हैं। उनके ख़र्च करने का तरीक़ा दरमियाना है, जो अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करते...।''
>
> —25 : 22-28

इन आयतों के अलावा और बहुत-सी आयतों में मोमिन की निशानियां बयान की गई हैं और उनमें माफ़ कर देना और दूसरों के ऐबों पर परदा डाल देना भी है। इसमें शक नहीं कि मुसलमानों को ज़ुल्म का बदला लेने की इजाज़त दी गयी है, बल्कि ऐसी सूरत में बदला लेने को बहुत ज़रूरी बताया गया है कि किसी ज़ालिम का होसला बढ़ जाने का ख़तरा हो, लेकिन अल्लाह ने माफ़ कर देने और

गुस्से पर क़ाबू पा लेने को बहुत पसन्द किया है और उसका बहुत सवाब देने का वायदा फ़रमाया है।

एक कम अक़्ल आदमी तो शायद यह कहेगा कि यह क्या बात हुई, लोग हमें सतायें और हम उन्हें माफ़ कर दें और लोग ग़लतियां करते रहें और हम उन्हें छिपाते रहें। लेकिन समझदार और भलाई चाहने वाले इसी तरीक़े को सबसे अच्छा मानेंगे जो क़ुरआन शरीफ़ ने बताया है। बिल्कुल सीधी-सी बात है कि अगर बुराई के बदले में बुराई ही की जाए, तो यह सिलसिला कभी ख़त्म न हो। अरब में जिहालत के ज़माने में ऐसा ही होता था। बिल्कुल मामूली-सी बातों पर झगड़ा शुरू हो जाता था और वर्षों ख़ून-ख़राबा होता रहता था।

इस्लाम ने बेवक़ूफ़ों के साथ बेवक़ूफ़ बन जाने से रोका और यह बात बताई कि अगर थोड़ा-सा ग़म सह लेने से फ़साद रुक जाए और माफ़ कर देने और दूसरों की ग़लतियां मशहूर न करने से किसी बुराई का ख़ात्मा हो तो फिर सब मुसलमानों को यही अच्छा तरीक़ा इख़्तियार करना चाहिए।

ऐसा करने से एक फ़ायदा तो यह होता है कि झगड़ा आगे नहीं बढ़ता। दूसरे इससे भी बड़ा फ़ायदा यह पहुँचता है कि जब मुख़ालिफ़ को यह मालूम होता है कि मेरे इस भाई ने मुझे रुस्वा होने से बचाया और सब्र का पानी छिड़क कर ग़ुस्से की आग को बुझाया है, तो उसके दिल में आप-से-आप नर्मी और मुहब्बत पैदा होती है और दुश्मनी, दोस्ती में बदल जाती है।

इसके मुक़ाबले में जब किसी को यह मालूम होता है कि फ़लाँ आदमी ने चुग़ली खाकर मुझे सज़ा दिलवाई है, तो वह उसका दुश्मन बन जाता है और बदला लेने की कोशिश करता है। इस बात से पता चलता है कि यह चुग़ली खाने वाली बात बिल्कुल घाटे की है। इंसान दुनिया में भी नुक़्सान उठाता है और अल्लाह का चोर भी बनता है, ख़ुदा सबको इस गुनाह से बचाए।

लड़ाई-झगड़े से बचना

लड़ाई-झगड़ा बच्चों की ज़िन्दगी में एक मामूली-सी चीज़ है। ज़्यादातर बच्चे तो जैसे हर वक़्त लड़ाई के लिए तैयार रहते हैं। ज़रा मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई बात हुई और उन्होंने झगड़ा शुरू कर दिया। यहाँ तक कि सगे बहन-भाईयों में भी यह बात देखने में आती है।

हालांकि कभी-कभी यह बात ज़रूरी हो जाती है कि आदमी अपने हक़ के लिए लड़े और बे-इन्साफ़ी न होने दे। मिसाल के तौर पर अगर कोई बुरा लड़का किसी की किताब छीन ले और उसे अपनी बहादुरी बताये, तो ज़रूरी है कि उसका मुकाबला किया जाए और किताब उससे वापस ली ज़ाए। लेकिन आम हालात में लड़ना-झगड़ना एक बुरी आदत है। बिना किसी बात के ग़ुस्से में भर जाना और अपनी बात मनवाने पर ज़िद करना ऐसी बुराई है, जिसे कोई भी पसन्द नहीं करता।

ज़िद्दी और झगड़ालू बच्चे अपने आपको कुछ भी समझें, लेकिन कोई भी उनकी इज़्ज़त नहीं करता, न उन्हें सच्चा प्यार मिलता है। ये दोनों चीज़ें, मतलब इज़्ज़त और प्यार तो उन बच्चों को हासिल होतीं हैं जो ख़ुद दूसरों की इज़्ज़त करते हैं और ख़ुद तक़लीफ़ उठा कर भी दूसरों को फ़ायदा पहुंचाते हैं।

एक कहानी में दो शहज़ादियों का हाल बयान किया गया है। उनमें से एक बात करती थी, तो उसके मुँह से फूल झड़ते थे और दूसरी बात करती थी, तो उसके मुँह से आग के अंगारे निकलते थे। ये फूल और अंगारे असल में उनकी बातें ही थीं। जिस शहज़ादी के बारे में

यह कहा गया है कि उसके मुंह से फूल झड़ते थे। वह अच्छे अख़्लाक़ की मालिक थी। सबके साथ मुहब्बत भरी आवाज़ में बात करती थी और ऐसा मौक़ा ही न आने देती थी कि किसी का दिल दुखे। बस इसीलिये उसके बारे में कहा जाता था कि उसके मुंह से तो फूल झड़ते हैं। दूसरी ऐसी न थी। वह सबको जली-कटी सुनाती और सबसे लड़ती-झगड़ती थी और इसीलिये लोग कहते थे कि उसके मुंह से तो आग के अंगारे निकलते हैं।

हम जो बातें करते हैं, उनका कुछ-न-कुछ नतीजा ज़रूर निकलता है। अच्छी बातों का अच्छा और कड़वी-कसीली का बुरा और यह बात बिल्कुल आसानी से समझ में आ जाती है कि दूसरों को जली-कटी सुनाने वाला और ग़ुस्सा दिखाने वाला जवाब में मीठे बोल नहीं सुन सकता। कोई कमज़ोर हुआ तो ख़ामोश ही रहा, लेकिन बराबर की टक्कर के लोग तो ईंट का जवाब पत्थर से देते हैं और झगड़ा शुरू हो जाता है।

हम अपने घरों के मामलात पर ग़ौर करें या बाहर के यही साबित होगा कि बिगड़ी हुई आदतों वाले किसी 'ईंटें खां' ने बद-ज़ुबानी की या दूसरों का हक़ दबाना चाहा और झगड़ा शुरू हो गया।

इसी तरह यह बात भी बिल्कुल आसानी से समझ में आ जाती है कि लड़ाई-झगड़े का नतीजा कभी अच्छा नहीं निकलता। यह शुरू हो जाए तो दोनों तरफ़ का नुक़्सान होता है और कभी-कभी तो इतना बड़ा नुक़्सान हो जाता है कि उसे किसी तरह भी पूरा नहीं किया जा सकता। मिसाल के तौर पर किसी की जान चली गई। अब कौन है जो मरे हुए आदमी को ज़िन्दा कर सके और कौन है जो जान लेने वाले को सज़ा से बचा सके। एक ग़ुस्से और बे-इन्साफ़ी की भेंट चढ़ा और दूसरे को अदालत के हुक्म से फांसी पर लटका दिया गया। फिर बात

यहीं ख़त्म नहीं हो जाती, बल्कि न ख़त्म होने वाली दुश्मनी की बुनियाद पड़ जाती है। दोनों तरफ़ का नुक़्सान होता है, यहां तक कि भरे घर ख़ाली हो जाते हैं।

बच्चों की लड़ाई में ऐसा नुक़्सान तो नहीं होता, लेकिन कुछ न कुछ नुक़्सान होता ज़रूर है। मिसाल के तौर पर बहन-भाइयों में झगड़ा हो, तो घर का अम्न तबाह हो जाता है और गली मुहल्ले में बदनामी होती है कि कैसे बेहूदा लोग हैं, जिन्होंने अपने बच्चों को अदब-तमीज़ नहीं सिखाया।

स्कूल में झगड़ा हो तो मुर्ग़ा-वुर्ग़ा बनने तक नौबत पहुँच जाती है और लड़ने वाले बच्चों के बारे में उस्तादों की राय ख़राब होती है। ग़रज़ इन फ़ुज़ूल बातों में घाटा-ही-घाटा है, फ़ायदा ज़रा-सा भी नहीं। इसी वजह से ही हमारे दीन इस्लाम ने लड़ाई-झगड़े को बहुत बुरा बताया है। क़ुरआन में है–

> "और अल्लाह फ़साद फैलाने वालों को बिल्कुल पसन्द नहीं करता।"
> –5:64

एक और जगह फ़रमाया गया–

> "और ज़मीन में फ़साद फैलाने की कोशिश न कर, अल्लाह फ़साद फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता।"
> –28:77

जिन लोगों को अल्लाह पसन्द करता है, उनकी यह निशानियाँ हैं–

> "जो हर हाल में (अल्लाह के लिये) अपने माल ख़र्च करते हैं, चाहे ग़रीबी की हालत में हों या ख़ुशहाल (और) जो ग़ुस्से को पी जाते हैं और दूसरों की ग़ल्तियां माफ़ कर देते हैं।"
> –3:134

क़ुरआन की इन आयतों के अलावा और भी बहुत-सी आयतें हैं, जिनसे जहाँ यह मालूम होता है कि अल्लाह फ़साद और फ़साद फैलाने वालों को बिल्कुल पसन्द नहीं करता और ऐसे लोगों को सख़्त सज़ा दी जायेगी, वहां यह बात भी मालूम होती है कि तमाम झगड़े बे-इन्साफ़ी, ज़िद, ख़ुदग़र्ज़ी और घमण्ड की वजह से शुरू होते हैं। जहां ये बुराइयां न होंगी, वहाँ लड़ाई-झगड़ा भी न होगा।

जो प्यारे बच्चे यह किताब पढ़ रहे हैं, हम उनसे कहेंगे कि वे अपने दिल में कोई ऐसी बुराई पैदा न होने दें, जो यक़ीनी तौर पर झगड़े की वजह बन जाती है।

जब से यह दुनिया बनी है, यह बात सच साबित होती चली आ रही है कि जिन लोगों के दिल में घमण्ड, लालच, बे-इन्साफ़ी और हसद वग़ैरह बुराइयाँ पैदा हुईं, उन्हें न सच्ची इज़्ज़त मिली और उनकी ज़िन्दगी आराम से गुज़री। जब तक ज़िन्दा रहे, लड़ाई-झगड़ों में ही फ़ंसे रहे और इस बात के हक़दार बन गये कि क़ियामत के दिन उन्हें सख़्त सज़ा दी जाये। सच्ची इज़्ज़त और हक़ीक़ी आराम उन ख़ुशनसीबों को मिला जिन्होंने नेकी का रास्ता अपनाकर अच्छे-अच्छे काम किये।

ये बातें पढ़ते हुये शायद कुछ बच्चे यह सोचें कि हम तो नन्हें-मुन्ने बच्चे हैं, हमें नेक और अच्छा बनने की कौन-सी जल्दी है। अभी तो शरारतें करने के दिन हैं। बड़े होंगे तो नेक भी बन जायेंगे। ऐसा सोचना ठीक नहीं। दुनिया के सब अक़्लमन्द लोग यह बात मानते हैं कि जो आदतें बचपन में पक्की हो जायें, बड़े हो कर वे और भी पक्की हो जाती हैं। अच्छी और शानदार ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए ज़रूरी है कि इस छोटी उम्र में ही अच्छी बातें सीखी जायें और उन पर अमल किया जाये।

अल्लाह घमण्ड करने वालों को पसन्द नहीं करता

ख़ुदा का शुक्र है कि आप एक अच्छे ख़ानदान में पैदा हुए हैं। आपके अब्बाजान बहुत बड़े सरकारी अफ़सर या बहुत अमीर ताजिर हैं। आप शानदार कोठी में रहते हैं और चमकती हुई कार में बैठकर स्कूल जाते हैं। लेकिन इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि आपके जिन साथियों के पास ये सब चीज़ें नहीं हैं, उन्हें आप कम दर्जे का जानें और अपने अमीर होने की शेख़ियां बघारें।

यह बात हम ने यूँ ही नहीं लिख दी है, बल्कि दुनिया में बहुत-से ऐसे बच्चे मौजूद हैं, जो शेख़ीख़ोरे भी हैं और ग़रीबों को कम दर्जे का भी ख़्याल करते हैं। माना कि अमीरों और ग़रीबों की हालत में फ़र्क़ होता है और चलिये यह भी मान लेते हैं कि इन्सानों के बीच यह फ़र्क़ अल्लाह ने रखा है, या अमीरों ने अपनी क़ाबिलियत से ऐसा ऊंचा दर्जा हासिल किया है। लेकिन यह बात फिर भी ठीक नहीं कि अपनी अच्छी हालत पर घमण्ड किया जाये और जो ग़रीब हैं, उन्हें कम दर्जे का समझा जाये।

कोई दूसरा ऐसा हो तो हो, लेकिन एक मुसलमान के दिल में तो इस तरह का ख़्याल भूलकर भी नहीं आना चाहिये। हमारा पाक दीन जो बात हमें सबसे पहले बताता है, वह यह है कि इस कायनात में जो कुछ भी है उसका मालिक अल्लाह है। उसी ने हर चीज़ को पैदा किया है। उसके अलावा दुनिया में जितने भी इंसान हैं, चाहे उनका रंग काला हो या गोरा और वे चाहे एशिया में रह रहे हों या यूरोप में, एक

माँ और एक बाप हज़रत आदम (अलै०) और हज़रत हव्वा (अलै०) की औलाद हैं।

इन बातों के अलावा हमारा दीन हमें यह भी बताता है कि अगर अल्लाह पाक ने अपनी ख़ास मेहरबानी से किसी को किसी तरह की बड़ाई दी है तो उसे घमण्ड नहीं करना चाहिये, बल्कि अपने रब का शुक्र अदा करना चाहिये। यह बात इसलिये ज़रूरी है कि हमारी कोई बड़ाई और कोई अच्छाई भी ख़ास अपनी कोशिशों की वजह से नहीं मिली, बल्कि हमें सब कुछ अल्लाह ने दिया है।

अगर किसी का बदन बहुत मज़बूत है या किसी का दिमाग़ बहुत अच्छा है या कोई बहुत अमीर घराने में पैदा हुआ है, तो अपनी कोशिश से नहीं। बल्कि अल्लाह की ख़ास मेहरबानी की वजह से उसे यह बड़ाई मिली है। और जब सब कुछ अल्लाह की मेहरबानी और इनायत की वजह से है तो फिर यह बात ज़रूरी है कि हम घमण्ड न करें, बल्कि सच्चे दिल से अल्लाह का शुक्र अदा करें।

मिसाल के तौर पर अगर किसी बच्चे के अब्बा जान उसके लिये बहुत अच्छे कपड़े बनवा दें। स्कूल या कालिज जाने के लिये कार का इन्तिज़ाम कर दें, जेब ख़र्च के लिये ढेर सारे रुपये दे दें और उसकी ख़िदमत के लिये नौकर मुक़र्रर कर दें और वह अपनी कम अक़्ली की वजह से यह ख़्याल करे कि यह सब कुछ तो मेरा हक़ था, जो मुझे मिल गया है और अपने अब्बा जान का अदब करने और उनका शुक्रिया अदा करने के बजाये बद-तमीज़ बन जाये और इतराता फिरे तो यह कितनी बुरी बात होगी?

उसको यह चाहिये था कि वह अपने अब्बा जान की इस मुहब्बत और मेहरबानी पर ग़ौर करता और पहले से ज़्यादा उनका अदब करता और दिल से यह बात मानता कि मुझे जो इज़्ज़त और आराम मिला है, मेरे अब्बाजान की मेहरबानी से मिला है।

उन लोगों का हाल उस नाशुक्र गुज़ार बेटे ही का-सा है, जो अल्लाह की दी हुई नेमतों का शुक्र अदा के बजाय उलटे घमण्डी बन गये हैं और कमज़ोरों की मदद करने की जगह उन पर रोब जमाते और उन्हें कम दर्जे का समझते हैं।

क़ुरआन हमें बताता है कि अल्लाह ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करता जो घमण्ड करते हैं। इस बारे में बहुत-सी आयतें हैं, जिनमें एक यह है–

> "यक़ीन करो अल्लाह किसी ऐसे आदमी को पसन्द नहीं करता जो घमण्ड करने वाला हो और अल्लाह ने उसे जो कुछ दिया है, उस पर इतराये। और ऐसे लोग भी अल्लाह को पसन्द नहीं हैं, जो कंजूस हैं और दूसरों को भी कंजूसी करने को कहते हैं।" —4:36-37

यहाँ यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि जिस तरह अल्लाह घमण्ड करने वालों को पसन्द नहीं करता, उसी तरह उसके बन्दे भी इतराने वालों और घमण्ड करने वालों को पसन्द नहीं करते, चाहे किसी वजह से उनके मुंह पर कोई कुछ न कहता हो, लेकिन दिल में सब उनको बुरा कहते हैं। सच्चे दिल से इज़्ज़त उन लोगों की की जाती है जो नर्म दिल और सबका भला चाहने वाले हों।

सही मायनों में शुक्र अदा करना यही है कि अल्लाह ने अपनी रहमत से जो माल दौलत दिया है, उसमें से ग़रीबों और हक़दारों का हिस्सा निकाला जाये। उन्हें कम दर्जे का न समझा जाये। उन पर रोब न जमाया जाये, बल्कि नर्म और मीठी ज़ुबान में बात की जाये। बेशक यह बात भी ज़रूरी है कि इन्सान ज़ुबान से अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा करे, लेकिन सही शुक्र अदा करना यह है कि घमण्ड से बचा जाये और ग़रीबों और कमज़ोरों की मदद की जाये। ऐसा करने का फ़ायदा यह होगा कि अल्लाह और ज़्यादा मेहरबानियाँ करेगा। माल व दौलत में बरकत होगी और लोगों की नज़रों में इज़्ज़त बढ़ेगी।

बदगुमानी से बचो

बदगुमानी का मतलब है कि किसी के बारे में यूँ ही कोई राय क़ायम कर लेना। मिसाल के तौर पर अगर किसी क़िस्म का नुक़्सान हो जाए तो तहक़ीक़ के बिना यह ख़्याल करना कि मेरा यह नुक़्सान ज़रूर फ़लां आदमी ने किया है या किसी के बारे में यह समझना कि उसमें फ़लां-फ़लां ख़राबियाँ हैं वग़ैरह।

क़ुरआन शरीफ़ हमें बताता है कि बदगुमानी बहुत बड़ा गुनाह है, जो लोग अपनी नादानी से यह गुनाह करते हैं, अल्लाह उन से सख़्त नाराज़ होता है और क़ियामत के दिन जब इन्सानों के अच्छे बुरे कामों का हिसाब होगा, तो उन्हें सख़्त सज़ा देगा। क़ुरआन में है–

> "ऐ वे लोगो। जो ईमान लाए हो, बदगुमानी से बचो। बदगुमानी सख़्त गुनाह है (और) लोगों की बुराइयां तलाश न करो।" —49 : 12

इस आयत में बदगुमानी के अलावा इस बात से भी रोका गया है कि इन्सान दूसरों में ऐब ढूंढ़ता फिरे। सही इस्लामी अख़्लाक़ यह है कि दूसरों के बारे में अच्छी राय रखी जाए। अगर कोई ऐसा आदमी मिले जिसे पहले से न जानते हों तो उसके बारे में यह ख़्याल न कर लें कि यह ज़रूर एक बुरा आदमी है, बल्कि पहली राय यह होनी चाहिये कि यह एक अच्छा आदमी है। रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया है–"अपने भाइयों के बारे में अच्छी राय क़ायम करो।"

प्यारे नबी (सल्ल०) के इस फ़रमान के मुताबिक़ हमें चाहिये कि अपने मिलने-जुलने वालों और दोस्तों ही के बारे में नहीं, बल्कि जिन

लोगों को हम पहले से न जानते हों उनके बारे में भी यह ख़्याल करें कि ये अच्छे हैं हां, इस सिलसिले में यह एहतियात ज़रूरी है कि जब किसी के साथ कोई मामला करने लगें तो यह तहक़ीक़ ज़रूर कर लें कि उसकी शिरकत फ़ायदेमन्द भी होगी या नहीं।

दरअसल लोगों के बारे में राय क़ायम करने के दो पहलू हैं। एक तो यह कि तहक़ीक के बग़ैर किसी को बुरा आदमी समझ लिया जाए और दूसरा यह कि ख़ास जान-पहचान के बग़ैर हर आदमी का ऐतबार कर लिया जाए। सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि बिला वजह ही किसी को मुजरिम भी न समझा जाए और तहक़ीक़ के बग़ैर किसी पर अन्धा भरोसा भी न किया जाए। चाहिए यह कि हम सबको अच्छा समझें, लेकिन जब कोई मामला करने लगें तो मुनासिब अन्दाज़ में तहक़ीक़ कर लें। मिसाल के तौर पर अगर घर के काम-काज के लिए एक नौकर की ज़रूरत हो तो बिल्कुल नावाक़िफ़ आदमी को यह ख़्याल करके नौकर न रख लें कि यह ज़रूर मेहनती और ईमानदार होगा, बल्कि पहले उसके बारे में ज़रूरी बातें मालूम कर लें।

बदगुमानी का ज़्यादा मौक़ा असल में उस वक़्त पैदा होता है, जब किसी की कोई चीज़ खो जाए। यह तो मालूम नहीं होता कि चीज़ किसी ने चुरा ली है या कहीं रखकर भूल गये हैं। ख़्याल भटकता है और कभी किसी के बारे में गुमान होता है कि ज़रूर उसी ने उठाई होगी और कभी किसी के। इस तरह अच्छे भले समझदार लोग भी परेशान हो जाते हैं।

ज़रूरी है कि ऐसे मौक़ों पर यूं ही किसी को चोर न समझ लिया जाये और जब तक किसी का जुर्म साबित न हो जाये उसके बारे में ग़लत राय क़ायम न की जाये।

चीज़ें गुम हो जाने के मौक़ों के अलावा आपस के मेल-जोल के सिलसिले में भी बुरे ख़्यालात दिल में पैदा होते हैं। कभी ऐसा होता है कि हम अपनी किसी बात को ज़ाहिर करना नहीं चाहते और किसी वजह से वह ज़ाहिर हो जाती है, तो अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के बारे में बदगुमानी पैदा हो जाती है कि ज़रूर उन्हीं ने चुग़ली खाई होगी।

ऐसे सब मौक़ों पर अल्लाह और उसके सच्चे रसूल (सल्ल०) के फ़रमान को याद रखना चाहिये और बदगुमानी के गुनाह से बचना चाहिये।

देखा गया है कि इस बद-गुमानी की वजह से कभी-कभी बहुत बड़ा फ़साद फैल जाता है। ऐसे तमाम नुक़्सानों से बचने का सबसे अच्छा तरीक़ा यही है कि इन्सान अपने दिल में बद-गुमानी को जगह न बनाने दे। पहले तोले फिर मुंह से बोले। यानी पहले अच्छी तरह छान-बीन कर ले और फिर किसी के बारे में कोई राय क़ायम करे। ऐसा करने से दोस्त ज़्यादा होंगे। लड़ाई-झगड़े कम होंगे, बल्कि यहां तक फ़ायदा होगा कि जो लोग किसी वजह से दुश्मन बन गये हैं, दोस्त बन जायेंगे।

वायदा पूरा करो

बच्चे हों या बड़े, सब मिल जुलकर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और एक-दूसरे के काम आते हैं, इस तरह रहने-सहने में कभी-कभी ऐसा होता है कि हम कोई काम उसी वक़्त नहीं कर सकते जब उसके लिए कहा जाये और यह कह देते हैं कि काम फ़लाँ दिन कर देंगे। इस तरह कहने को वायदा कहते हैं और इस्लामी अख़्लाक़ यह है कि जब किसी से कोई वायदा किया जाये तो वह ज़रूर पूरा हो।

सिर्फ़ किसी का दिल ख़ुश करने के लिये यह कह देना कि हम यह काम कर देंगे और फिर यह वायदा पूरा न करना झूठ की एक बहुत बड़ी क़िस्म है और जो लोग ऐसा करते हैं, उन्हें इसकी सज़ा मिलेगी, इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी।

इस दुनिया में तो इस गुनाह की सज़ा यह मिलती है कि लोग ऐसे आदमी पर भरोसा नहीं करते, उसे घटिया दर्जे का आदमी समझते हैं, और दूसरी दुनिया में तो वह दोज़ख़ में डाला जायेगा।

अल्लाह पाक ने वायदा पूरा करने का हुक्म दिया है। क़ुरआन पाक में फ़रमाया गया है—

> "वायदा करो तो उसे ज़रूर पूरा करो, बेशक तुम्हें वायदे के बारे में जवाब देना पड़ेगा।" —17:34

वायदा पूरा करने के बारे में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की ज़िन्दगी का यह क़िस्सा एक बहुत अच्छी मिसाल है—इससे अन्दाज़ा हो जाता है कि आप वायदा फ़रमाते थे, तो उसका कितना ज़्यादा ख़्याल रखते थे।

बताया जाता है कि एक ताजिर ने आपसे कहा, "आप यहीं रुक कर मेरा इन्तिज़ार फ़रमाइये, मैं थोड़ी देर बाद आ जाऊंगा और मामला तय करूंगा।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "ठीक है, मैं यहां ठहर कर तुम्हारा इन्तिज़ार करूंगा।" अब इत्तिफ़ाक़ ऐसा हुआ कि वह ताजिर यह बात भूल गया। तीन दिन बाद उसे यह बात याद आई। भागा-भागा उस जगह पहुंचा तो देखा प्यारे नबी (सल्ल०) वहाँ मौजूद थे। उसने अपनी ग़लती की माफ़ी मांगी।

इस क़िस्से से इस बात का पता चलता है कि अपना यह वायदा पूरा करने के लिये कि मैं यहीं इन्तिज़ार करूंगा, रसूल (सल्ल०) ने तीन दिन उस ताजिर का इन्तिज़ार किया और अपनी तकलीफ़ का ख़्याल न फ़रमाया।

वायदा पूरा करना क्यों ज़रूरी है? इसका अन्दाज़ा करने के लिये इस तरह सोचना चाहिये कि अगर कोई आदमी हम से वायदा करे और उसे पूरा न करे तो हमें कितना ज़्यादा अफ़सोस होगा। हो सकता है इस वायदा ख़िलाफ़ी से कोई बड़ा नुक़सान हो जाये।

सब जानते हैं कि हमारी दुनिया के सब कारोबार एक-दूसरे पर भरोसा करने की वजह से चल रहे हैं। तिजारत की मंडियों और बाज़ारों में ताजिर, एक-दूसरे के वायदे पर भरोसा करते हैं और कारोबार बहुत अच्छे तरीक़े से चलता रहता है। अगर ज़रा देर के लिये एक-दूसरे का भरोसा ख़त्म हो जाये और सब वायदा ख़िलाफ़ी करने लगें तो एक दिन में सारी मंडियाँ और बाज़ार बन्द हो जाएं।

जैसा कि हम लिख चुके हैं कि इंसान बड़ा होकर जैसा कुछ बनता है, उसकी अच्छी या ख़राब आदतें बचपन की उम्र में पक्की होती हैं। अगर किसी बच्चे को छोटी उम्र में झूठ बोलने की आदत पड़ जाये, तो जवान होकर वह एक झूठा आदमी बनेगा। इसलिये ज़रूरी है कि सब

बच्चे अपनी इस नन्हीं-सी उम्र ही में अपने आपको ज़्यादा-से-ज़्यादा अच्छा बनाने की कोशिश में लग जायें मिसाल के तौर पर:—

हमेशा सच बोलें। सच बोलने की सूरत में चाहे सज़ा मिलने का डर हो और चाहे किसी क़िस्म का नुक़्सान ही क्यों न होता हो। ऐसा करने से वक़्ती तौर पर बेशक कुछ तकलीफ़ पहुँच सकती है, लेकिन इसका फ़ायदा यह होगा कि बड़े होकर वे एक अच्छे और कामियाब इन्सान बनेंगे और उनकी शराफ़त की वजह से हर जगह उनकी इज़्ज़त की जायेगी, बल्कि हो सकता है वह सज़ा से भी बच जायें, जब वह सच-सच बता दें कि हम से यह ग़लती हो गई है, तो उन्हें माफ़ कर दिया जाये।

वायदा पूरा करने की आदत भी बच्चों को अपनी इसी उम्र से डालना चाहिये। जो बच्चा भी हमारी इस बात पर अमल करेगा, वह देखेगा कि सब उसे अच्छा समझेंगे, सब उससे प्यार करेंगे और उसे फ़ायदा पहुँचाने की कोशिश करेंगे।

इसके मुक़ाबले में जो बच्चे ऐसा नहीं करेंगे, यानी अपनी आदतों को अच्छा नहीं बनायेंगे, वे इस बचपन की उम्र में भी इज़्ज़त नहीं पा सकेंगे। कोई उन्हें शरारती कहेगा, कोई बदतमीज़। उनकी ग़लतियों पर उन्हें सज़ा भी मिलती रहेगी। ग़रज़ जो फ़ायदा हासिल करने के लिये वे झूठ बोलेंगें, या वायदा करके पूरा न करेंगे, वह उन्हें बिल्कुल हासिल न होगा और इसी तरह ज़िंदगी गुज़ारते हुये, जब वे बड़े होंगे तो उनकी बिगड़ी हुई आदतों की वजह से, फिर तो इस तरह उनके माथे पर यह लिख दिया जायेगा कि इससे बच कर रहो, यह एक बुरा आदमी है!

तौबा-तौबा कितना बड़ा नुक़्सान है यह। अल्लाह सब को ऐसी जिल्लत से बचा कर रखे, आमीन!

एक और ज़रूरी बात

प्यारे बच्चों ने इस किताब में जो बातें पढ़ीं उनकी मिसाल सच्चे मोतियों की-सी है, जो देखने में भी अच्छे लगते हैं और फ़ायदा भी पहुंचाते हैं और इसी वजह से बहुत कीमती माने जाते हैं। लेकिन इन बातों का सही फ़ायदा केवल उन्हीं बच्चों को पहुंचेगा जो उन पर अमल करेंगे।

कहावत मशहूर है, अगर कोई आदमी बादामों की तारीफ़ करता रहे कि ये बहुत फ़ायदा पहुंचाते हैं, बहुत लज़ीज़ होते हैं, लेकिन उन्हें तोड़ कर कभी न खाये तो उसके तारीफ़ करने से उसे वे फ़ायदे कभी नहीं पहुँच सकते जो अल्लाह पाक ने बादाम में रखे हैं। यह फ़ायदे तो उसे हासिल होंगे, जो बाज़ार से बादाम ख़रीद कर लायेगा और फिर उन्हें तोड़ कर खायेगा। बस हमें चाहिये कि अच्छी बातें पढ़ कर उन पर अमल करें।

इसी तरह इस बात को अच्छी तरह समझ लेना और दिल में बैठा लेना चाहिये कि इन्सान सच्ची कामियाबी सच्ची इज़्ज़त नेक और अच्छा बन कर ही हासिल कर सकता है। जाहिल, बेपरवाह और बुरी आदतों वाले तो सच्ची कामियाबी और सच्ची इज़्ज़त की झलक भी नहीं देख सकते। वे तो अपनी बुराइयों की सज़ा पाते हैं और उस कूड़े-कबाड़ की तरह होते हैं, जिसे कोई भी अपने घर में रखना पसन्द नहीं करता। उसका ठिकाना तो बस गंदगी का ढेर होता है। अल्लाह किसी को ऐसा न बनाये।

ऐसे बेपरवाह बच्चे जिन्हें हमने कूड़ा-कबाड़ कहा है, अपनी इस

बुरी आदत की वजह से इस बात पर ग़ौर करने के लिए तैयार नहीं होते कि कौन-सी बात फ़ायदा पहुँचाने वाली है और कौन-सी नुक़्सान देने वाली है। बल्कि एक और बुराई यह कि रोक-टोक करने वालों को वे अपना दुश्मन ख़्याल करते हैं। उनका दिल चाहता है, उन्हें किसी काम से न रोका जाये। हंसी मज़ाक़ की बातें करने, खेलने-कूदने और मज़े-मज़े की चीज़ें खाते रहने को वे अपनी कामियाबी ख़्याल करते हैं, लेकिन उनके ऐसा समझने से कोई बुरी चीज़ अच्छी नहीं बन सकती। पढ़ने-लिखने और हुनर सीखने के मुक़ाबले में गपशप और खेलने-कूदने में समय बर्बाद करना बहुत बुरी बात है और उसका नतीजा बुरा ही निकलता है और ऐसे बच्चे बड़े होकर कामियाब और ख़ुशहाल इन्सान नहीं बन सकते।

आप छोटे बच्चे भी यह बात बिल्कुल आसानी से समझ सकते हैं कि जो आज बच्चा है कल बड़ा हो जायेगा और ज़िंदगी के हालात कुछ इस तरह बदल जायेंगे कि अपने बच्चों की सारी ज़रूरतें पूरी करने वाले माँ-बाप यह उम्मीद करेंगे कि अब अपना ख़र्च वे ख़ुद पूरा करें, बल्कि घर की ज़रूरतें पूरी करने के लिये कुछ कमा कर लायें और ऐसा वही कर सकेंगे, जिन्होंने सीखने की उम्र में इल्म हासिल किया होगा, या कोई हुनर सीखा होगा। एक शायर ने कहा है—

बे-हुनर भीख तक न पायेगा!